फरवरी-२०२६ ◆ वर्ष १५ ◆ अंक १० ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
फरवरी-२०२६

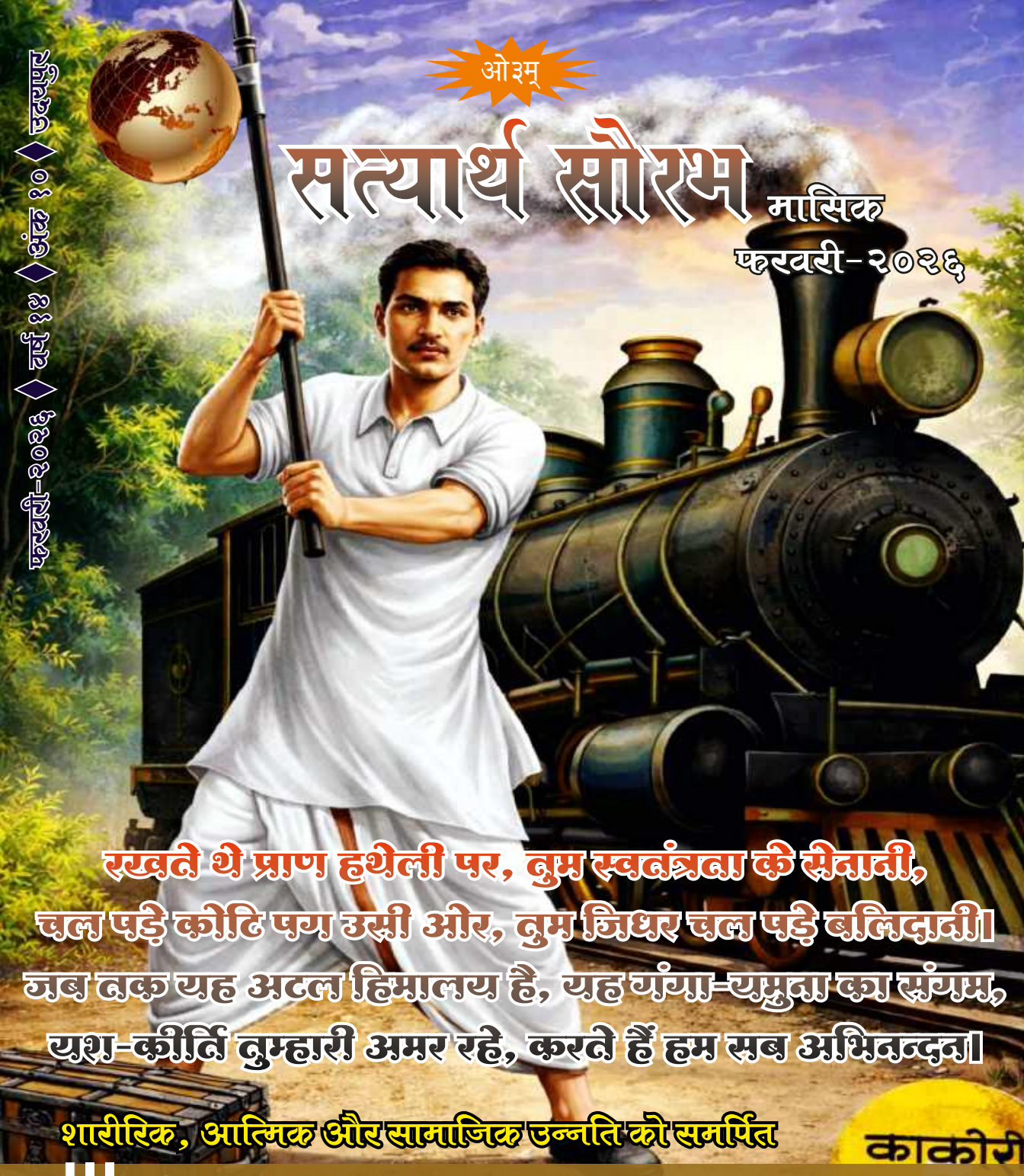

रखते थे प्राण हथेली पर, तुम स्वतंत्रता के सेनानी,
चल पड़े कोटि पग उसी ओर, तुम जिधर चल पड़े बलिदानी।
जब तक यह अटल हिमालय है, यह गंगा-यमुना का संगम,
यश-कीर्ति तुम्हारी अमर रहे, करते हैं हम सब अभिनन्दन।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

काकोरी

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १७२

5 KM

सफलता के 6 मूल मंत्र

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२५
माघ कृष्ण षष्ठी
विक्रम संवत् २०८२
दयानन्दाब्द २०१

February- 2026

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

०७ **गाथा अमर बलिदानियों की**

एक प्रयास: भारत के हुतात्माओं को विनम्र श्रद्धांजलि

समाचार २१

हलचल ३०

०६	वेद सुधा
१०	सत्यार्थ मित्र बनें
११	राष्ट्र, सत्य और मानव-धर्म
१६	जतिन्द्र मोहन सेन
१७	वैदिक उदात्त भावनाएँ
१९	बहुत महत्त्वपूर्ण है रूठे स्वजनों ....
२२	क्या टीपू सुल्तान न्यायप्रिय शासक था?
२७	स्वास्थ्य- स्मृतिदौर्बल्य

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १४ अंक - १०

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

राष्ट्र मन्दिर

मातृभूमेः कृतार्थाय ये प्राणान् हर्षतः त्यजन्। तेषां ऋणं न शक्नोमि कर्तुं जन्मशतैरपि॥
कर्तुं न शक्यते किञ्चित् यदि सेवां महात्मनाम्। नमामः श्रद्धया तान् वै, एष धर्मः सनातनः॥

नवलखा महल सांस्कृतिक केंद्र उदयपुर
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर

राष्ट्र मन्दिर

नवलखा की पावन माटी, फिर से आज मुस्कायी है,
'राष्ट्र मन्दिर' की मूरत में, शौर्य की गाथा छायी है।
'दयानन्द' का मंत्र मिला अरू, 'श्रद्धानन्द' का ज्ञान यहाँ,
'आजाद' की अमर प्रतिज्ञा, 'सावरकर' बलिदान यहाँ।
'बिस्मिल', 'भगत', 'खुदीराम' का, इंकलाब फिर गूँजेगा,
'नेताजी' का 'दिल्ली चलो', अब भारत भर में गूँजेगा।
'नीरा' की अद्भुत कुर्बानी, 'गोविन्द गुरू' की शक्ति यहाँ,
'श्याम जी', 'मदनलाल' का जीवन, देशप्रेम की भक्ति यहाँ।
'करतार सिंह' और 'दीक्षित जी' के, त्याग की पावन थाती है,
सिलिकॉन के इन रुपों में, बलिदानों की बाती है।
राष्ट्र मन्दिर बुलाता तुमको, वीरों का वन्दन करने को,
राष्ट्र धर्म की इस ज्योति को, अपने मन में भरने को।।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई

ओ३म्

वेद सुधा

ज्ञानी पुरुष सब ओर ईश्वरकृत अद्भुत बातों को देखता है

अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति।
कृतानि या च कर्त्वा।। - ऋग्वेद १/२५/११

ऋषिः— **आजीगर्तिः शुनः शेपः।।** देवता—**वरुणः।।** छन्दः—**गायत्री।।**

विनय— इस संसार में हम बहुधा आश्चर्यचकित कर देने वाली घटनाएँ होते देखा करते हैं। इनका करने वाला कौन है? वैसे तो प्रतिदिन होने वाली बातों को भी यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो हमें उनमें भी बड़ी अद्भुतता दिखेगी। ये अन्धकार और प्रकाश कितनी अद्भुत वस्तु हैं जिनका परिवर्तन हम रोज सायं-प्रातः देखते हैं। नन्हें से बीज से बड़ा भारी वृक्ष बन जाना; अभी चलते-फिरते, हँसते-खेलते मनुष्य का एकदम ऐसा सो जाना कि वह फिर कभी न जग सकेगा; जीव से जीव पैदा हो जाना- ये सब भी वास्तव में कितनी अद्भुत बातें हैं! परन्तु जब पृथिवी आग बरसाने लगती है और ज्वालामुखी फटने से सैंकड़ों शहर बरबाद हो जाते हैं, भूकम्प आते हैं, बड़े-बड़े साम्राज्य देखते-देखते मिट जाते हैं, थोड़े ही दिनों में एक मनुष्य सितारे की भाँति ऊँचा उठ जाता है, यशस्वी हो जाता है या राजा रंक हो जाता है, तो इनमें अद्भुतता सभी अनुभव करते हैं।

विज्ञान के आजकल के अद्भुत चमत्कारों को देखो! सिद्ध साधु-सन्तों द्वारा चकित कर देने वाली बातों को देखो! ये सब संसार में एक-से-एक बढ़कर अद्भुत हैं। इन सब अद्भुतों का करने वाला कौन है? हम लोग समझते हैं कि इनके करने वाले मनुष्य हैं, मनुष्य की वैज्ञानिक-शक्ति या संघ शक्ति है; या कुछ भी नहीं है केवल प्रकृति का खेल है, **परन्तु जो 'चिकित्वान' (जानने वाले) हैं उन्हें तो सब ओर इन अद्भुतों का करने वाला वही इन्द्र (परमेश्वर) दिखता है। उसी से ये सब संसार के आश्चर्य निकलते दीखते हैं। इन सब विविध आश्चर्य को देखते हुए उनकी दृष्टि सदा उस एक इन्द्र पर ही रहती है।** उनके लिए फिर ये आश्चर्य कुछ आश्चर्य नहीं रहते। प्रभु तो 'गूँगे को वाचाल करने वाले और लँगड़े को भी पहाड़ लँघानेवाले' हैं ही। संसार में जो अद्भुत बातें हो चुकी हैं वे सब प्रभु की ही की हुई थीं; कल जो अद्भुत घटना होनेवाली हैं, कोई तख्ता पलटने वाला है, वह भी उसी प्रभु की सहज लीला से ही होने वाला है। प्रभु की अपार लीला देखने वाले ज्ञानी इसमें कुछ आश्चर्य नहीं करते। **वे अद्भुत से अद्भुत घटना में भी कार्य कारण भाव को देखते हैं।**

अतः हे मनुष्यो! संसार के इन आश्चर्यों को देखकर चकित होना छोड़ दो, किन्तु इनको देखकर इनके कर्त्ता को पहचानो। उस नट को पहचानो जो कि संसार को यह अद्भुत नाच नचा रहा है।

शब्दार्थ— **चिकित्वान्**= ज्ञानी पुरुष **कृतानि या च कर्त्वा**= जो की जा चुकी हैं और जो की जाएँगी **विश्वानि अद्भुतानि**= उन सब अद्भुत बातों को **अतः**= इस परमेश्वर से हुई **अभिपश्यति**= सब ओर देखता है।

लेखक- आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
परिशोधक एवं सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- वैदिक विनय

❑❑❑

आत्म निवेदन

क्या है राष्ट्र मन्दिर, उदयपुर

नायं संग्रहणं मूर्तेः न क्रीडास्थान व च।
अत्र जागर्ति इतिहासः, त्यागवीर्येण सजीवितः।।
ये प्राणानर्पयन् राष्ट्रे, स्वातन्त्र्यार्थं युगे युगे।
तेषां स्मृत्यर्थमेतद्धि, राष्ट्रमन्दिरमुच्यते।।

राष्ट्र मन्दिर कोई साधारण संग्रहालय नहीं है। यह ईंट-पत्थर की संरचना नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का जीवन्त प्राण केन्द्र है। महर्षि दयानन्द की विचारधारा से अनुप्राणित भारतीय क्रांतिवीरों के बलिदानों को समर्पित यह वह स्थान है जहाँ उनके संकल्प और जिजीविषा को अनुभव कर सकेंगे।

आज जब अधिकांश म्यूजियम मनोरंजन, कौतूहल या समय-व्यतीत तक सीमित हैं, राष्ट्र मन्दिर का उद्देश्य बिल्कुल भिन्न है। **राष्ट्र बोध, राष्ट्रचेतना का उन्नयन और स्वतंत्रता का मूल्य उन लोमहर्षक क्षणों के साक्षात् से ही उद्बुद्ध हो सकता है, यही इस स्मारक का उद्देश्य है।** इसलिए यहाँ प्रतिमाएँ मौन नहीं, बोलती सी प्रतीत होती हैं। यहाँ दर्शक केवल दर्शक नहीं साक्षी और सहभागी बन जाता है। महर्षि दयानन्द की राष्ट्र चेतना को आत्मसात् कर भारत माँ के जो लाल स्वातन्त्र्य युद्ध में कूद पड़े थे, ऐसे ही हुतात्माओं को यह संग्रहालय समर्पित है। राष्ट्र मन्दिर में भारत के १८ महान् क्रान्तिकारियों को उनके जीवन के सबसे निर्णायक क्षणों में प्रदर्शित किया गया है, ऐसे क्षण, जिन्होंने भारत के भविष्य की दिशा बदल दी।

श्यामजी कृष्ण वर्मा विदेश की भूमि पर बैठकर क्रान्ति की वैचारिक नींव रख रहे हैं, तो ठाकुर केसरी सिंह बारहठ अपनी हवेली में बैठकर वह कविता रच रहे हैं, जिसने राजसत्ता के सामने राष्ट्राभिमान को खड़ा कर दिया। खुदीराम बोस बाल्यावस्था की सीमा लांघकर बग्घी पर बम फेंकते हुए इतिहास में अमर हो रहे हैं तो चन्द्रशेखर आजाद पेड़ की आड़ में अंग्रेजी सत्ता से अन्तिम मुठभेड़ लड़ रहे हैं, झुकने के स्थान पर मिट जाना स्वीकार करते हुए।

राष्ट्र मन्दिर की सबसे विशिष्ट विशेषता है, समय-संगत साउण्डट्रैक आधारित अनुभव। यहाँ कदम-कदम पर बदलती ध्वनियाँ, गोलियों की गूँज, जनान्दोलन की हलचल, और क्रान्तिकारियों की पुकार, दर्शक को उसी कालखण्ड में ले जाती हैं, जहाँ १४ वर्ष के बालक को भी जीवन की नहीं, केवल राष्ट्र की चिन्ता थी।

यह स्थान हमें एक कठोर प्रश्न के समक्ष लाकर खड़ा कर देता है। जिन्होंने हमें स्वतंत्र हवा में साँस लेने का अधिकार दिया, क्या हमने कभी उन्हें कुछ लौटाया?

राष्ट्र मन्दिर उसी ऋण-स्मरण का प्रयास है। यह सम्मान का स्थान है, कृतज्ञता का तीर्थ है, और आने वाली पीढ़ियों के लिए राष्ट्रबोध की पाठशाला है।

राष्ट्र मन्दिर हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता सहज नहीं मिली थी। भारत माता के बच्चे को अधिकार है यह जानने का, कि वे दिव्य आत्माएँ कौन थीं जिनके कारण स्वतंत्रता मिली? राष्ट्र मन्दिर वही स्थान है।

यह मात्र चित्र लेने की जगह नहीं, **यह सिर झुकाने की भूमि है। राष्ट्र मन्दिर वह स्थल है जहाँ प्रतिमाएँ नहीं, बलिदान दृश्यमान होते हैं।**

अनूठी कलाकृति अनूठा प्रस्तुति प्रकार (अन्तिम चेतावनी)

(साइमन कमीशन विरोध, लाहौर-१९२८)

सूत्रधार

साइमन कमीशन- जो षड्यंत्र की गठरी बाँधकर भारत की धरती पर उतरा था, वह देशभक्तों की दृष्टि से छिपा नहीं रह सका। लाहौर की सड़कों पर स्वाभिमान का सैलाब उमड़ा।

(तिरंगे, हाथ उठे हुए, नारों का निनाद)

भीड़- "साइमन कमीशन गो बैक! साइमन कमीशन गो बैक!"

लालाजी- यह हमारा संघर्ष है! और यह तब तक चलता रहेगा- जब तक साइमन कमीशन, भारत छोड़कर नहीं चला जाता!

(दूर से कर्कश आवाज। पुलिस आगे बढ़ती है।)

पुलिस अधिकारी- सिपाहियों! इस राज-विरोधी जुलूस को यहीं रोक दो!

(पुलिस अधिकारी लालाजी की ओर बढ़ता है।)

पुलिस अधिकारी (धमकी भरा स्वर)- लाला लाजपत राय, मैं आपको चेतावनी देता हूँ। यहीं से लौट जाइए, वरना आपके लिए अच्छा नहीं होगा!

लालाजी (शान्त, अडिग)- हमें अपनी नहीं, केवल अपने राष्ट्र की परवाह है। जो राष्ट्र के लिए अच्छा है उसके लिए हम अपने प्राणों की बाजी लगा देंगे!

पुलिस अधिकारी (क्रुद्ध)- तुम लोग ऐसे नहीं मानोगे? सिपहियो! लाठीचार्ज करो!

(लाठीचार्ज। चीखें, कराहें। लोग गिरते हैं।)

ध्वनि- ठाक!२ आह!२

लालाजी (पीड़ा के बीच, ऊँचे स्वर में)- मैं अभी भी आपसे कहता हूँ, यह बर्बरता बन्द करो! हम शान्तिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे हैं!

(अचानक- एक सिपाही की लाठी लालाजी के सिर पर पड़ती है।)

लालाजी (असाधारण तेज और ललकार)- **इस समय तुम हमें मार सकते हो पर ध्यान रखना! मेरे बदन पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में अन्तिम कील साबित होगी!**

भीड़ (करुणा और क्रोध के साथ, दोहराती है)- लालाजी पर पड़ी एक-एक लाठी- ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की अन्तिम कील साबित होगी!

सूत्रधार

(लालाजी अचानक भूमि पर गिर पड़ते हैं।) (कराहें रुक जाती हैं। चारों ओर सन्नाटा।)।

पंजाब की पुण्यभूमि पर, ढुडीके ग्राम में जन्मे, गुरु राधाकृष्ण जी और माता गुलाब देवी के संस्कारों से सिंचित, आर्यसमाज को अपनी माता और महर्षि दयानन्द को अपना पिता मानने वाले लाला लाजपत राय राष्ट्र क्रान्ति के आधार-स्तम्भ बने, और भारत की आत्मा को निर्भीक वाणी प्रदान करने वाले सिंह-हृदय पुरुष बने। आज उनका शरीर भूमि पर निःशब्द पड़ा है, पर उनका संकल्प इतिहास के शिखर पर अग्निलेख बनकर अंकित हो चुका है। क्रान्ति-शिखर को शत-शत नमन।

×——×——×——×——×

जेल की काल कोठरी में पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल कैद हैं। रात का समय है सुबह उनको फांसी होने वाली है। जमादार की आवाज आती है जेल की कोठियों की बैरक को अपने लाठी से खटखटाता हुआ- 'जागते रहो-जागते रहो' बिस्मिल की बैरक पर आता है 'अरे पण्डित जी यह सारे के सारे कुम्भकरण बने पड़े हैं परन्तु आप इतनी जल्दी जगे हुए! अच्छा अरे-अरे क्षमा करें।' बिस्मिल हँसते हुए कहते हैं 'यही कहना चाहते हो ना कि आज तो मुझे फांसी होने वाली है। यह तो सत्य है, इसमें इतना संकोच क्यों? और फांसी है क्या? आत्मा कभी नहीं मरती। वेद कहता है-

'वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तꣳ शरीरम्।

जमादार यह कहता हुआ चला जाता है 'पण्डित जी मैंने आज तक आप जैसा व्यक्ति नहीं देखा, जिसे फांसी हो रही है और वह इतना प्रफुल्लित है। प्रणाम करता हूँ आपको।' और वह चला जाता है। आवाज फिर से आने लगती है लाठी की बैरक से टकराने की और जागते रहो-जागते रहो की।

सूत्रधार कहता है- 'महर्षि दयानन्द की राष्ट्रवादी विचारधारा में पला बढ़ा यह युवक मृत्यु को नींद से अधिक कुछ नहीं समझता। इसीलिए फांसी से पूर्व संध्या करने बैठ जाता है-

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्.....।'

इतने में जेलर, डॉक्टर आ जाते हैं- 'चलिए पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल! फांसी का समय हो चुका है। बिस्मिल प्रसन्नता पूर्वक साथ चल देते हैं और जेलर से कहते हैं- 'जेलर साहब जिन नारों ने आपके गोरे आकाओं की

नींद उड़ा दी फांसी पर चढ़ने से पहले उनको क्यों ना लगा लूँ। **'वन्दे मातरम्! वन्दे मातरम्! इंकलाब जिन्दाबाद! इंकलाब जिन्दाबाद!'** के नारे लगाते हैं। **'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।'**

फांसी की रस्सी गले में डालकर- जल्लाद भाई लो मैंने फांसी के फंदे को चूम कर अपने गले में डाल दिया दबाओ खटका, बस १ मिनट रुको- **ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रन्तन्न आ सुव॥**

हाँ अब दबाओ खटका।

११ जून १८९७ को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में जन्मे माता मूलमती देवी और पिता मुरलीधर के संस्कारों से गढ़े गए राम कलम में क्रान्ति, रक्त में स्वाधीनता का ज्वार लिए, हँसते-हँसते फाँसी चूमकर अमर हो गए। बिस्मिल को श्रद्धा सहित नमन।

इस प्रकार से मनमोहक ऑडियो ट्रेक के साथ १८ क्रान्तिकारियों के सिलिकॉन स्टेच्यू राष्ट्र मन्दिर में आपको निश्चित रूप से अभिभूत कर देंगे। अवश्य पधारें।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

❑❑❑

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : **AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001** में जमा करा कृपया सूचित करें।

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

राष्ट्र, सत्य और मानव-धर्म

किसी भी राष्ट्र की शक्ति केवल उसकी सीमाओं या सेना में नहीं रहती। उसकी वास्तविक शक्ति उसकी संस्कृति में होती है। संस्कृति वह आधार है, जो लोगों के विचार, आचरण, मूल्य और जीवन-दृष्टि को दिशा देता है। यदि कोई राष्ट्र पवित्र और महान् बनना चाहता है, तो उसे अपने भीतर ऐसी संस्कृति को स्थापित करना होता है जो सत्य, कर्तव्य और धैर्य पर आधारित हो।

1. **संस्कृति**- राष्ट्र की आत्मा- जिस राष्ट्र की अपनी संस्कृति मजबूत होती है, वही समय की कठिनाइयों को झेल पाता है। उदाहरण के लिए, भारत की प्राचीन परम्पराएँ आज भी मानवता, सहिष्णुता और सत्य को सर्वोच्च स्थान देती हैं। यही कारण है कि विपरीत परिस्थितियों में भी समाज की आत्मा टूटती नहीं।

यदि किसी राष्ट्र की संस्कृति नष्ट हो जाए, तो धीरे-धीरे उसकी पहचान मिटने लगती है। बिल्कुल वैसे ही जैसे जड़ों से कटे वृक्ष का अस्तित्व लम्बे समय तक नहीं टिकता।

2. **सत्यवादी मनुष्य और विपत्ति**- सत्य पर चलने वाला मनुष्य संसार में सबसे मजबूत माना गया है, लेकिन उसका मार्ग कभी आसान नहीं होता। जब सत्यवादी पर आक्रमण होता है, तो उसका धैर्य और नैतिक शक्ति परखी जाती है। यदि वह क्षणिक क्रोध या दुःख में कोई गलत कार्य कर दे, तो उसका स्वयं का तेज भी क्षीण हो जाता है।

उदाहरण– हमारे पूर्वजों ने असहनीय परिस्थितियों में भी सत्य को नहीं छोड़ा। उनके जीवन में बहुत बड़े आघात आए, पर उन्होंने अपने सिद्धान्तों से विचलित होने के बजाय और अधिक दृढ़ता से सत्य को अपनाया।

सन्देश स्पष्ट है कि विपत्ति में सत्य से हट जाना, व्यक्ति के व्यक्तित्व को खो देना है।

3. **आपत्तियों में विचारों का त्याग**- सबसे बड़ा दोष- जो व्यक्ति कठिनाई आने पर अपने ऊँचे विचारों का त्याग कर देता है, वह वास्तव में स्वयं के साथ धोखा करता है। महान् विचार व्यक्ति के लिए प्रकाश-स्तम्भ की तरह होते हैं। संकट के समय उनका त्याग कर देना ऐसा है, जैसे जहाजी तूफान में अपना पतवार फेंक दे।

उदाहरण– यदि कोई व्यक्ति जीवन में संघर्ष देखकर अपने नैतिक मूल्य छोड़ दे, तो वह बाहरी सफलता

तो पा सकता है, परन्तु भीतर से टूट जाता है। वही मनुष्य पाप की ओर बढ़ता है, जो परिस्थिति देखकर अपना धर्म बदल ले।

4. कर्म का फल अनिवार्य है- कर्म का सिद्धान्त सीधा है- जो किया है, वही भोगना पड़ेगा। यही ईश्वरीय व्यवस्था है। फल चाहे सुख हो या दुःख, मनुष्य को उसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। यदि हमने कर्म किया ही है, तो उसके फल से क्यों डरें?

उदाहरण– यदि किसान बीज बोता है, तो फल आने पर उसे आश्चर्य नहीं होता। उसी तरह, जीवन में भी अपने कर्मों के परिणाम को प्रसन्नता से स्वीकार करना ही परिपक्वता है।

5. स्थिरता– वृक्ष का सन्देश- जैसे वायु के वेग से वृक्ष हिलता है, पर अपनी जड़ और छाया नहीं छोड़ता, वैसे ही ऊँचे चरित्र वाले लोग विचारों की आँधी से नहीं डिगते। आज का मानव अकसर दूसरों की राय और बाहरी परिस्थितियों से विचलित हो जाता है। यह विचलन ही जीवन को अस्थिर बनाता है।

उदाहरण– यदि कोई व्यक्ति सोशल मीडिया, समाज या वातावरण से प्रभावित होकर अपने सिद्धान्त बदलता रहे, तो वह मन से बेचैन रहता है। स्थिरता वही पाता है, जो अपने मूल्यों पर अटल रहे।

6. कर्तव्य ही स्वर्ग है- जिस समय समाज में हर व्यक्ति अपने कर्तव्य को ईमानदारी से निभाता है, वही अवस्था स्वर्ग कहलाती है। स्वर्ग कोई भौतिक स्थान नहीं, बल्कि एक सामाजिक स्थिति है।

उदाहरण– यदि परिवार, समाज, शिक्षक, शासक, व्यापार- हर क्षेत्र में लोग अपने-अपने धर्म का पालन करें, तो वहाँ विवाद, अन्याय और संघर्ष कम हो जाते हैं। यह स्थिति ही धरती पर स्वर्ग का रूप है।

7. सत्याभ्यासी और परम नियम- जो व्यक्ति

सत्य का अभ्यास करता है, वह प्रकृति की व्यवस्था के विपरीत नहीं चल सकता। सत्य का पालन करने वाले योगी परमात्मा के नियमों का उद्घाटन करते हैं, क्योंकि उनका मन आसक्ति और भ्रम से मुक्त होता है। ऐसे व्यक्ति समाज को दिशा दिखाते हैं, मार्गदर्शन देते हैं।

राष्ट्र की पवित्रता उसके लोगों के चरित्र से बनती है। सत्य, स्थिरता, कर्तव्य और कर्म की स्पष्ट समझ- ये वे चार स्तम्भ हैं, जो किसी भी समाज को उन्नत बनाते हैं।

मनुष्य का जीवन तभी सार्थक होता है जब वह विपत्ति में भी अपने विचारों को न छोड़े, कर्मफल को स्वीकार करे और सत्य को अपनी जीवन-पद्धति बना ले। यही वह मार्ग है, जो व्यक्ति को ऊँचा और राष्ट्र को महान् बनाता है।

- विशाल आर्य
उपाचार्य
भागल भीम, भीनमाल, जिला- सिरोही

❑❑❑

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

महर्षि दयानन्द के कुछ अद्भुत प्रसंग

1. जहाँगीराबाद, बुलन्दशहर निवासी ओंकारदास एक समृद्ध और व्यायामशील व्यक्ति थे। मेले में आकर वह भी स्वामीजी के भक्त बन गए। एक दिन चरण दबाने के बहाने उन्होंने स्वामीजी के बल की परीक्षा की। उसने देखा स्वामीजी के पैर लोहे की छड़ जैसे हैं। पूरा बल लगाकर भी वह अपनी अंगुलियाँ पैरों में न धँसा सका।

2. स्वामी जी महाराज ने काशी में मुसलमानी मत का भी खण्डन किया। इससे मुसलमान चिढ़ गये। एक दिन वे गंगा तट पर अकेले थे। मुसलमानों की एक टोली उधर आ निकली। उसमें से दो व्यक्तियों ने महाराज की बगलों में हाथ देकर उन्हें ऊपर उठा लिया और गंगा में फेंकना चाहा। स्वामी जी उनका दुष्ट संकल्प ताड़ गये। उन्होंने दोनों को अपनी भुजाओं में कसकर गंगा में छलांग मारी और फिर स्वयं डुबकी लगाकर दूसरे पार जा निकले। उन दोनों को वहीं डुबकी खाते छोड़ दिया।

3. कासगंज (एटा) में एक दिन गुलजारीलाल खत्री की वाटिका के सामने दो सांड परस्पर बल परीक्षा कर रहे थे । दोनों ओर से मार्ग अवरुद्ध हो गया था। स्वामी जी कुछ विद्यार्थियों सहित उधर से जा रहे थे। उन्हें ज्ञात हुआ कि यह द्वन्द युद्ध लगभग दो घण्टों से चल रहा है। स्वामी जी ने उन रणरत सांडों के समीप जा, एक-एक सींग पकड़कर इतना बलपूर्वक धक्का दिया कि दोनों का मुँह आकाश की ओर उठ गया और इस प्रकार वे एक-दूसरे से अलग होकर मार्ग छोड़ कर चल दिये।

4. मथुरा में स्वामी जी महाराज एक दिन व्याख्यान दे रहे थे। कुछ धूर्तों ने एक कलवार और एक कसाई को भेजा। वे शोर मचाकर अपनी शराब और माँस के दाम माँगने लगे। स्वामी जी ने हंसकर कहा- 'व्याख्यान के पश्चात् तुम्हारा हिसाब भी हो जायेगा।' व्याख्यान के पश्चात् स्वामी जी ने एक-एक हाथ में दोनों के सिर पकड़ कर भिड़ा दिये। वे घबरा उठे और सच-सच कह दिया कि किसने उन्हें बहकाकर भेजा था। दयालु दयानन्द ने उन्हें तुरन्त क्षमा कर दिया। इन धूर्तों ने बताया कि मांगीलाल नाम के मुनीम की यह धूर्तता थी। कहते हैं कि एक दुराचारिणी स्त्री को भी इसी प्रकार सिखा कर सभा में भेजा गया। परन्तु सभा में आकर स्वामी जी के तेज से वह ऐसी प्रभावित हुई कि उसका सारा पाप जाता रहा। ऐसे महात्मा को कलंकित करने के विचार को मन में लाना भी पाप है, ऐसा सोच वह इतनी दुखी हुई कि क्षमा माँगे बिना उसे शान्ति न हुई।

5. एक बार एक स्त्री आकर स्वामी जी महाराज से बात करने लगी। स्वामीजी नीचे दृष्टि किये बातें

करते रहे थे। वह कभी स्त्रियों के मुख की ओर देखकर बातें नहीं करते थे।

6. सूरत निकटवर्तीय ग्रामवासियों के आमन्त्रण पर स्वामी जी वहाँ गये और उनको उपदेश देकर कृतार्थ किया। स्वामी जी मार्ग में इतने वेग से चलते थे कि अन्य साथी तो क्या, दो कांस्टेबिल भी इनके साथ

नहीं चल पाते थे। स्वामीजी बार-बार आगे निकल जाते थे और लोगों की प्रतीक्षा करने के लिए उन्हें खड़ा होना पड़ता था। स्वामीजी ने कांस्टेबिलों से कहा कि तुम लोग सिपाही होकर भी हमारे साथ नहीं चल सकते।

7. मेरठ की घटना है, एक रात्रि को ९ बजे बैनीप्रसाद और कुछ मित्रों ने महाराज की सेवा में उपस्थित होकर कहा कि हम आपके पैर दबाना चाहते हैं। महाराज जान गये कि वह लोग उनके बल की परीक्षा करना चाहते हैं। अतः उन्होंने कहा कि पैर तो पीछे दबाना पहले हमारे पैर को उठाओ। यह कहकर उन्होंने अपने पैर फैला दिये। युवकों ने बहुतेरा बल लगाया परन्तु पैर को न उठा सके।

8. स्वामीजी ने एक बार कहा कि आप इस समय आश्चर्य करते हैं कि मैं इतनी दूर तक वायु सेवन के लिये जाता हूँ, परन्तु चालीस-चालीस मील चलना मेरे लिये कोई बात न थी। मैं एक बार गंगोत्री से चलकर गंगासागर तक और एक बार गंगोत्री से रामेश्वर तक चला था। मैं निरन्तर कई दिन तक मध्याह्न तप्त रेत में पड़ा रहा हूँ और हिमाच्छादित पर्वतों में और गंगातट पर नग्न और निराहार सोया हूँ।

9. स्वामीजी बहुत जल्दी चलते थे। वह आगरा में जब सेठ गुल्लामल के बाग में ठहरे थे, तो अनेकों बार आगरा से मथुरा १८ कोस (३६ मील तीन घण्टे में पहुँच गये थे।

10. स्वामीजी महाराज का यह नियम था कि मध्याह्न के भोजन के पश्चात् १६ मिनट ग्रीष्मकाल में और १८ मिनिट शीतकाल में निद्रा लिया करते थे। निद्रा पर उनका इतना अधिकार था कि लेटने के कुछ क्षण पश्चात् ही वह गाढ़ निद्रा में सो जाते थे और घड़ी की सुई १६ मिनिट पर पहुँचते ही मिनिट में अंगड़ाई लेकर उठ बैठते थे और दो-तीन मिनिट में हाथ मुँह धोकर वेदभाष्य के कार्य में लग जाते थे। लोग महाराज के इस नियत समय पर शैया त्याग से परिचित हो गये थे और वह घड़ी की सुई १६ मिनिट पर पहुँचते ही मुँह हाथ धुलाने का जल ठीक करके रख देते थे। रात्रि को १० का घण्टा बजते ही शैया पर लेट जाते थे और लेटते ही सो जाते। महाराज का निद्रा पर यह अधिकार देखकर सबको आश्चर्य होता था।

11. जोधपुर में जहाँ स्वामीजी ठहरे हुए थे उस बाग के द्वार के ऊपर कमरे में कोई पण्डित जी ठहरे हुए थे। उनके लिये बड़ी महारानी जी ने कुछ फल आदि चार-पाँच सेविकाओं के हाथ भेजे थे। वे जब द्वार पर आईं और पण्डित जी को पूछा तो सेवकों ने यह समझ कर कि वह स्वामी जी को पूछती हैं, उन्हें बाग के बीच बंगले पर भेज दिया। वहाँ पहुच कर उन्होंने पहरेदारों से पूछा। उन्होंने भी यही समझा कि पण्डित जी से उनका अभिप्राय स्वामी जी से है और कह दिया कि ऊपर हैं। वे ऊपर चली गईं। उस समय महाराज शैया पर लेटे हुए थे। उन्होंने जो करवट ली तो बरामदे में वह स्त्रियाँ खड़ी दिखाई दीं। उन्हें

देखकर वह सहसा उठकर जोर से चिल्लाये। चारण नवलदान साथ ही कोठरी में लेटा हुआ था। वह यह सुन कर घबरा गया, उसे भय हुआ कि किसी घातक ने महाराज पर आक्रमण किया है। वह भागा हुआ स्वामीजी के कमरे में गया। महाराज ने रोषपूर्ण शब्दों में कहा कि कैसा अन्याय है कि ये स्त्रियाँ हमारे सामने आ गई। यह तुम्हारे प्रबन्ध की त्रुटि है, इन्हें बाहर करो ।

12. जालन्धर में सरदार विक्रमसिंह ने स्वामी जी महाराज से कहा कि सुनते हैं ब्रह्मचर्य से बहुत बल बढ़ता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि यह सत्य है और शास्त्रों में भी ऐसा ही कहा गया है। वह बोले कि आप भी ब्रह्मचारी हैं, परन्तु आप में बल प्रतीत नहीं होता। महाराज इस समय तो चुप रहे किन्तु एक दिन जब सरदार विक्रमसिंह अपनी दो घोड़ों की गाड़ी पर

सवार हुए तो स्वामी जी ने चुपके से उनकी गाड़ी का पिछला पहिया पकड़ लिया। कोचवान के चाबुक मारने पर भी जब घोड़े आगे न बढ़े तो कोचवान और सरदार ने पीछे मुड़कर देखा कि स्वामीजी ने गाड़ी का पहिया पकड़ा हुआ है। स्वामी जी बोले मैंने यह ब्रह्मचर्य-बल का आपको परिचय दिया है।

13. बाबू अमृतलाल बांकीपुर निवासी ने बताया कि एक बार हम बनारस जा रहे थे। हमने देखा कि स्वामीजी लंगोट बाँधे सड़क दाऊदनगर पर जा रहे हैं। वहाँ सड़क के ऊपर कीचड़ थी और एक गाड़ी के बैल उसमें फंस गये थे। स्वामी जी ने देखा कि गाड़ीवान बैलों को मार रहा है किन्तु वे फिर भी नहीं चलते। उन्होंने जाकर बैलों को खोल दिया और गाड़ी को खींचकर पश्चिम की ओर कीचड़ से बाहर पहुँचा दिया। हम लोग यह देखकर स्वामी जी के अपूर्व बल पर आश्चर्य करने लगे। उस समय स्वामीजी काशी या दाऊदनगर को जा रहे थे।

14. गुजराँवाला में एक दिन व्याख्यान में स्वामी जी ने कहा कि हरीसिंह नलवा बड़ा शूरवीर हुआ है। इसका कारण सम्भवतः यह प्रतीत होता है वह २५-२६ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहा है। मेरी अवस्था इस समय ५१ वर्ष है और मुझे विश्वास है कि मेरा भी ब्रह्मचर्य अखण्डित है। जिसे अपनी शक्ति पर अभिमान हो वह आगे आये मैं उसका हाथ पकड़ता हूँ और वह उसे छुड़ा ले अथवा मैं अपना हाथ खड़ा करता हूँ, कोई उसे नीचे करे। सभा में लगभग पाँच सौ व्यक्ति उपस्थित थे और कई कश्मीरी पहलवान भी थे किन्तु आगे आने का किसी साहस न हुआ।

15. रामलाल (कायमगंज) से मुरादाबाद में स्वामी जी ने कहा कि मुझे कई बार विष दिया गया है। यद्यपि मैंने उसे वमन और वस्ती करके निकाल दिया परन्तु फिर भी उसका कुछ अंश रक्त में रह ही गया। इसी से मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया, अन्यथा मेरी आयु सौ वर्ष से अधिक होती और अब शरीर के अधिक रहने की आशा नहीं है।

16. श्री स्वामी जी महाराज को मृत्यु से कुछ घण्टे पूर्व अजमेर के सिविल सरजन डाक्टर न्यूमैन ने जब महाराज को आकर देखा तो आश्चर्य से कहने लगे कि रोगी अत्यन्त विशालकाय, वीर और रोग को सहने वाला है। इसकी आकृति से ज्ञात होता है कि यद्यपि रोग असह्य है, परन्तु यह अपने को दुःखी नही मानता। यही है जो ऐसे उग्र रोग में भी अपने को संभाल रहा है और अभी तक जीवित है। इस पर डाक्टर लक्ष्मणदास ने उनसे कहा कि यह स्वामी दयानन्द सस्वती हैं जिनका नाम आपने सम्भवतः सुना होगा। डाक्टर न्यूमैन ने यह बात सुनकर शोक प्रकट किया और महाराज के धैर्य की प्रशंसा की....

❑❑❑

प्रस्तुति- भावेश मेरजा, बड़ौदा

जतिन्द्र मोहन सेन

तारीख थी ३ मई १९२१। असम के चाय बागानों में काम करने वाले हजारों गरीब मजदूर अंग्रेजों के जुल्म से तंग आकर अपनी जान बचाकर भाग रहे थे। स्टेशन पर भीड़ थी, शोर था, और पुलिस की लाठियां बरस रही थीं। तभी बंगाल का एक सबसे महंगा और मशहूर वकील, जो कल तक सूट-बूट पहनकर अंग्रेजों के साथ अदालतों में बहस करता था, **अपना सब कुछ छोड़कर उन मजदूरों के बीच खड़ा हो गया वो इंसान कोई और नहीं, जतीन्द्र मोहन सेनगुप्ता थे।**

उस दिन जतीन्द्र जी ने सिर्फ मजदूरों का साथ नहीं दिया, बल्कि उन्होंने अपनी करोड़ों की वकालत को भी हमेशा के लिए लात मार दी जिसे पाने का सपना हर कोई देखता था। उन्होंने तय कर लिया था कि अब वो अंग्रेजों के कानून से नहीं, बल्कि हिंदुस्तानियों के हक के लिए लड़ेंगे। जतीन्द्र पढ़ने इंग्लैंड गए थे, वहां एक अंग्रेज लड़की 'एडीथ' (जिनका नाम आगे चलकर नेली सेनगुप्ता हुआ) से प्यार हुआ और शादी करके भारत लौटे। लोग सोचते थे कि एक अंग्रेज पत्नी वाला इंसान अंग्रेजों के खिलाफ कैसे लड़ेगा? लेकिन कमाल देखिए, उनकी पत्नी ने भी साड़ी पहन ली और कंधे से कंधा मिलाकर जेल जाने को तैयार हो गईं। जतीन्द्र जी का आभामंडल ऐसा था कि जब वे बोलते थे, तो पूरा बंगाल थम जाता था। उन्हें 'देशप्रिय' ऐसे ही नहीं कहा गया; एक बार जब उन्होंने रेलवे मजदूरों के लिए हड़ताल बुलाई, तो अंग्रेजों की सप्लाई चेन ठप हो गई। अंग्रेज अफसर उनसे इतना चिढ़ते थे कि उन्हें बार-बार जेल में डाला गया, लेकिन हर बार जेल से बाहर आते ही वे और भी दोगुनी ताकत से खड़े हो जाते। वे कोलकाता के मेयर भी रहे, लेकिन कुर्सी से उन्हें कभी मोह नहीं रहा। उनके लिए आज़ादी का मतलब सिर्फ अंग्रेजों को भगाना नहीं

था, बल्कि गरीबों को उनका हक दिलाना था। लगातार जेल की रोटियां और सीलन भरी कोठरियों ने उनके शरीर को तोड़ दिया था। १९३३ में जब वे रांची में नजरबंद थे, तब उनकी तबीयत बहुत ज्यादा खराब हो गई। बिस्तर पर पड़े-पड़े भी उनके दिमाग में सिर्फ एक ही बात थी मेरा देश कब आज़ाद होगा और इसी तड़प के साथ उन्होंने अपनी आखिरी सांस ली

जतीन्द्र मोहन सेनगुप्ता की कहानी हमें याद दिलाती है कि क्रांति सिर्फ बंदूकों से नहीं आती। कभी-कभी अपनी जमी-जमाई ऐश की जिंदगी को छोड़कर धूप में खड़ा होना, सबसे बड़ी क्रांति होती है। आज जब हम आज़ाद हवा में सांस लेते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि एक ऐसा भी इंसान था जिसने हमारे लिए अपनी पूरी तिजोरी और अपनी पूरी जिंदगी दांव पर लगा दी थी

❑❑❑

-सिद्धम आर्य, नवलखा महल, गुलाबबाग

१. विश्व कल्याण

एक वेदभक्त विश्वकल्याण की कामना करते हुए कहता है-

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम्॥
(अथर्ववेद ०१/३१/४)

मन्त्र में पहली बात कही गई है कि हमारी माता और पिता के लिये कल्याण हो। दूसरे शब्दों में हम यूँ कह सकते हैं कि मन्त्र के प्रथम चरण में परिवार के कल्याण की कामना की गई है। विश्व कल्याण की भावना का प्रारम्भ घर से होता है। परन्तु केवल अपने परिवार की कल्याण-कामना कोई बहुत ऊँचा आदर्श नहीं है। क्योंकि-

अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्र ऊर्जं सुभूतं स्वस्ति सविता नः कृणोतु। अशत्रिचन्द्रो अभयं नः कृणोत्वन्यत्र राज्ञामभि यातु मन्युः॥ **(अथर्ववेद ६/४०/२)**

हमारे इस ग्राम की चारों दिशाओं में शासक वर्ग बलदायक भौतिक सामग्री को उत्पन्न कराए और इस प्रकार हमारा कल्याण करे। राजा हमारे लिये शत्रु से रहित निर्भयता सम्पादन करे और राजाओं का क्रोध अन्यत्र, दूसरे स्थान पर चला जाये। अपनी प्रार्थना को जारी रखते हुए भक्त कहता है-

"स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः"

हमारी गौओं के लिये और संसार के सभी मनुष्यों का कल्याण हो। गौ यहाँ प्राणिमात्र का उपलक्षण है। वेद में एक अन्य स्थान पर प्रार्थना की गई है-

शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

यह मेरा है, यह पराया है, यह तो क्षुद्र हृदय व्यक्तियों की बातें हैं। उदार आशय व्यक्तियों के लिए तो सारा संसार ही कुटुम्ब के समान होता है। अतः वैदिक भक्त परिवारिक कल्याण-कामना के पश्चात् कहता है-

विश्वं पुष्टं ग्रामेऽस्मिन्नानातुरम्। **(यजुर्वेद १६/४८)**

इस ग्राम में समस्त प्रजा और पशु आदि प्राणी नीरोग, स्वस्थ, व्याकुलतारहित, निर्भय और हृष्टपुष्ट होकर रहें। हमारे ग्राम कैसे हों-

नृभ्यो नारिभ्यो गवे॥ **(ऋग्वेद १/४३/६)**

परमपिता परमात्मन् हमारे अश्वों, भेड़ और भेड़ी, पुरुष और स्त्रियों, गौ और बैलों के लिये सुख और शान्ति उत्पन्न कर। न केवल परमात्मा ही हमारे कल्याण का कारण हो अपितु पुरुष और स्त्री सभी दूसरों का कल्याण करें। विश्वकल्याण के लिये नारी को कितना सुन्दर उपदेश दिया गया है-

शिवा भव पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा।
शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय शिवा न इहैधि॥
(अथर्ववेद ३/२८/३)

हे गृहव्यवस्थापिके! देवि! तू पुरुषों के लिये

कल्याणकारिणी हो, गौओं और अश्व आदि पशुओं के लिये भी कल्याणकारिणी हो। इस समस्त क्षेत्र संसार के लिये भी सुखकारिणी हो। हमें सुख देने वाली होकर इस लोक में विराजमान रह। पुरुष भी कल्याणकारक हो-

शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः।
मा द्यावापृथिवीऽअभिशोचीर्मान्तरिक्षं मा वनस्पतीन्॥
(यजुर्वेद ११/४५)

हे अङ्गिरः! हे प्यारे! तू मानव प्रजाओं के लिये कल्याणकारी हो, तू पृथिवी और आकाश के मध्य में रहने वाले प्राणियों को सन्तप्त मत कर। अन्तरिक्षस्थ प्राणियों को भी कष्ट मत दे। **'वनस्पतीन् मा'** वनस्पतियों को कष्ट मत दे, उनका व्यर्थ नाश मत कर। इससे सिद्ध है कि वृक्षों में भी जीव है। जहाँ हम पृथ्वी और आकाश के मध्य रहने वाले प्राणियों को कष्ट न दे वहाँ-

शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम्। (अथर्ववेद १९/१४/१)

आकाश और पृथिवी के प्राणी भी मेरे लिये और कल्याणकारी हों।

स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु। (अथर्ववेद १९/८/७)

आगे भक्त फिर कहता है-

विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु।

यह समस्त संसार भौतिक ऐश्वर्यों से और उत्तम ज्ञान से सम्पन्न हो। और अन्तिम बात जो मन्त्र में कही गई वह है हम चिरकाल तक सूर्य का दर्शन करते रहें अर्थात् हम दीर्घजीवी बनें। इन्हीं वैदिक विचारों के आधार पर किसी संस्कृत कवि ने भी कैसी सुन्दर कामना की है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

सभी सुखी हों, सभी नीरोग हों, सभी भद्र देखें, किसी पर दुःख और कष्ट न आये।

वेद की प्रार्थनाएँ मनुष्य मात्र के लिये हैं-

भद्राहं नो मध्यन्दिने भद्राहं सायमस्तु नः।
भद्राहं नो अहां प्राता रात्री भद्राहमस्तु नः॥
(अथर्ववेद ६/१२८/२)

दिन का मध्याह्न काल हमारे लिये सुखकर, कल्याणकारी हो, सायंकाल हमारे लिये सुखकारी हो। हमारे दिनों का प्रातः काल और रात्रि काल भी हमारे लिये कल्याणकारी हो।

यो ३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तस्य त्वं प्राणेना प्यायस्व। आ वयं प्यासिषीमहि गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिगृहैर्धनेन॥ (अथर्ववेद ७/८१/५)

हे परमात्मन्! जो हम से वैर विरोध रखता है और जिससे हम शत्रुता रखते हैं तू उसे भी दीर्घायु प्रदान कर। वह भी फले-फूले हम भी समृद्धिशाली बनें। हम सब गाय, बैल, घोड़ों, पुत्र, पौत्र, पशु और धन-धान्य से भरपूर हों। सब का कल्याण हो और हमारा भी कल्याण हो।

पाठकगण! उपर्युक्त मन्त्रों में विश्वकल्याण की कितनी उच्च और उदात्त भावनाएँ हैं। संसार के सारे साहित्य को पढ़ जाइये इससे सुन्दर और मनोरम विचार आप को कहीं नहीं मिलेंगे।

लेखक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- वेदप्रकाश विशेषांक (मासिक पत्रिका)

❑❑❑

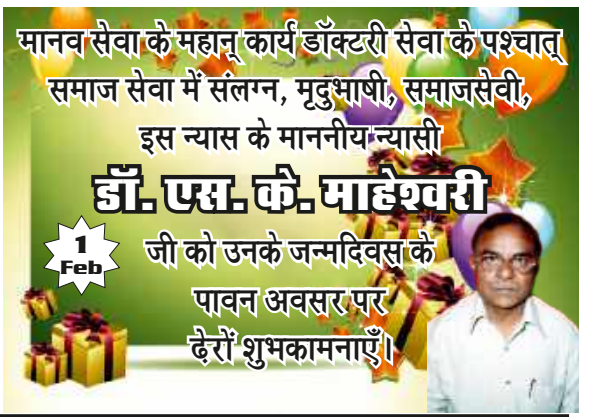

रूठना और मनना-मनाना जीवन का स्वाभाविक क्रम है। ये दो विपरीतार्थक नहीं अपितु पूरक शब्द हैं। इसके बिना जीवन की गाड़ी चल ही नहीं सकती लेकिन रूठने और मनने-मनाने की एक सीमा होती है। इस सीमा का अतिक्रमण घातक हो सकता है इसलिए सभी समझदार लोग रूठे हुओं को फ़ौरन और बार-बार मनाने का परामर्श देते हैं। कविवर रहीम कहते हैं:

रूठे सुजन मनाइए जौ रूठें सौ बार,
रहिमन फिरि-फिरि पौहिए टूटे मुक्ताहार।

यदि कोई सुजन अर्थात् हमारा कोई स्वजन, कोई प्रिय अथवा कोई अच्छा व्यक्ति हमसे रूठ जाए तो उसे हमेशा ही मना लेना चाहिए चाहे वो बार-बार ही क्यों न रूठता हो। रहीम कहते हैं कि यदि मुक्ताहार अर्थात् मोतियों का हार टूट कर बिखर जाए तो उसके मोतियों को फिर से धागे में पिरो लेना चाहिए। यदि हम टूटे हुए मुक्ताहार अर्थात् बिखरे हुए मोतियों को दोबारा धागे में पिरो लेंगे तो वो पहले की तरह ही उपयोगी और सुंदर हो जाएगा जिससे आसानी से उसे पहन सकेंगे अन्यथा मोती इधर-उधर बिखरकर महत्त्वहीन हो जाएँगे अथवा खो जाएँगे। उनकी आब भी जा सकती है। जिस प्रकार से मोती जब तक एक सूत्र में गुँथे रहते हैं तभी तक उपयोगी रहते हैं उसी प्रकार से जब तक संबंध भी मधुर और आत्मीय रहते हैं तभी तक उनका महत्त्व है।

हमारे संबंध तो मुक्ताहार से भी अधिक क़ीमती और महत्त्वपूर्ण होते हैं इसलिए उन्हें हर हाल में टूटने से बचाना चाहिए और संबंध टूट जाने के बाद फ़ौरन बाद उन्हें सुधारने अथवा रूठे हुओं को मनाने का प्रयास करना चाहिए ताकि संबंधों की सार्थकता बनी रहे। टूटे अथवा बिखरे हुए संबंध अनुपयोगी हो जाते हैं। अच्छे संबंध हमारा पोषण और विकास करते हैं जबकि विकृत संबंध हमारी उन्नति में बाधक और हमारे स्वास्थ्य के लिए घातक होते हैं। यदि हम अपने

रूठे हुए स्वजनों अथवा प्रियपात्र को नहीं मनाएँगे तो इसका दुष्प्रभाव ही हमारे जीवन पर पड़ेगा। यदि हमारा कोई प्रिय हमसे रूठ जाता है तो हमें भी अच्छा नहीं लगता। हम भी बेचैन हो जाते हैं और जब तक सामनेवाला मान नहीं जाता हम मानसिक रूप से उद्विग्न रहते हैं। रूठा हुआ व्यक्ति अथवा हम स्वयं कई बार कुछ ऐसा कर गुजरते हैं जो दोनों के लिए ही शुभ नहीं होता। इसलिए यह अनिवार्य है कि रूठे हुओं को फ़ौरन मानाया जाए। ये हमारे ही हित में होगा। फिर भी यदि हम उसे नहीं मनाते या मनाने

का प्रयास नहीं करते हैं तो इसका अर्थ है कि हममें आत्मीयता अथवा प्रेम का अभाव है या फिर अहंकारवश ऐसा नहीं कर रहे हैं।

रूठे हुए स्वजनों अथवा प्रियपात्र को फ़ौरन मनाने का अर्थ है कि हम न केवल उनसे अगाध प्रेम करते हैं अपितु हम पूर्णतः निरहंकार भी हैं। प्रायः अहंकार, उपेक्षा अथवा स्वार्थ के कारण ही हमारे संबंध खराब होते हैं। जब कोई उपेक्षित अनुभव करता है तभी वह दुखी होता है अथवा रूठता है। जब हम रूठे हुए को फ़ौरन मना लेते हैं तो सामनेवाले की ये ग़लतफ़हमी भी फ़ौरन ही दूर हो जाती है कि उसकी उपेक्षा की गई थी। यदि हमसे कोई ग़लती हो गई हो तो उसे स्वीकार कर क्षमा माँगी जा सकती है। ऐसा करेंगे तो सामनेवाला न केवल अपने अमर्ष का त्याग कर देगा अपितु ऐसे में संबंध और अधिक प्रगाढ़ हो जाएँगे इसमें संदेह नहीं। जब लंबे समय तक रूठना चलता है तो दोनों तरफ से बहुत सी ग़लतफ़हमियाँ बढ़ती चली जाती हैं जिन्हें बाद में दूर करना मुश्किल हो जाता है। वैसे भी यदि हम अपने प्रियजनों को नहीं मनाएँगे तो उनके सान्निध्य के बिना कैसे रहेंगे? और यदि अच्छे लोगों को नहीं मनाएँगे तो उनके मार्गदर्शन व उनकी संगति से होने वाले लाभों से वंचित रह जाएँगे अतः रूठे हुए अच्छे व्यक्तियों को मनाना भी हमारे स्वयं के हित में ही होगा।

यदि कोई हमसे रूठ सकता है तो हम भी तो किसी से रूठ सकते हैं। हमारा रूठना भी अस्वाभाविक नहीं। जिस प्रकार किसी रूठे हुए को मनाना और शीघ्र मनाना अनिवार्य है उसी प्रकार स्वयं रूठने पर हमारा भी शीघ्र मान जाना अच्छी बात है। सामान्यतः किसी बात पर नाराज़ होकर रूठने पर यदि कोई मनाए तो जल्दी मान जाना व्यक्ति की सरलता व शालीनता का प्रतीक है। इसका सीधा-सा अर्थ है कि मन में अत्यधिक क्रोध, कुटिलता अथवा कटुता थी ही नहीं। इस प्रकार का आचरण भावनात्मक दृष्टि से संतुलित व्यक्तित्व का द्योतक होता है। ऐसा व्यक्ति प्रशंसा का पात्र होता है। ऐसे व्यक्ति जो एक बार रूठने पर किसी भी तरह से नहीं मानते हैं अथवा अत्यधिक नखरे दिखलाते हैं इससे उनके व्यक्तित्व की जटिलता का पता चलता है। सामान्य लोग ऐसे लोगों से दूर रहना चाहेंगे और किसी भी प्रकार के संबंध नहीं बनाना चाहेंगे। वैसे तो रूठने की अवस्था में किसी के भी मनाने पर शीघ्र मान जाना हमारे संबंधों पर बहुत अच्छा और सकारात्मक प्रभाव डालता है लेकिन पति-पत्नी के संबंधों के निर्वहन में तो ये और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है।

पति-पत्नी को प्रायः हर समय साथ रहना होता है अतः उनके बीच मनमुटाव अथवा रूठने जैसी क्रिया

का बार-बार व अपेक्षाकृत अधिक होना स्वाभाविक है। जो पति-पत्नी एक दूसरे से रूठने पर जल्दी मान जाते हैं उनका जीवन बहुत अच्छी प्रकार से चलता है। जो पति-पत्नी एक दूसरे से एक बार रूठने पर मानने का नाम ही नहीं लेते उनका जीवन तबाह होना निश्चित है। मनाने पर न मानने का अर्थ है दोनों तरफ कटुता में लगातार वृद्धि। जो पति-पत्नी एक दूसरे से रूठने पर जल्दी मान जाते हैं उनके बीच स्थायी वैमनस्य और कटुता नहीं आती। यदि कोई ये समझे कि झटपट मान जाना उसकी कमज़ोरी प्रदर्शित करता है तो ये सोच बिलकुल सही नहीं है। इससे तो व्यक्ति के स्वभाव की सरलता, शालीनता व

विनम्रता का ही पता चलता है। जो लोग एक बार किसी से रूठने पर किसी भी तरह से मानने का नाम ही नहीं लेते वे वास्तव में अपने भाग्य से ही रूठ जाते हैं। उनके व्यवहार में जड़ता आ जाती है।

ज़िद्दी अथवा मनाने पर किसी भी तरह से न मानने वाला व्यक्ति चाहे वो पुरुष हो या स्त्री सुखी व संतुष्ट जीवन व्यतीत नहीं कर पाता। वह जीवन में मनचाही सफलता से कोसों दूर रह जाता है। इसमें संदेह नहीं कि किसी से रूठने पर स्वयं भी जल्दी मान जाना हमारे व्यक्तित्व के विकास के लिए ही नहीं भौतिक उन्नति के लिए भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। कई बार किसी अवधि का मनमुटाव बहुत बड़ा अनर्थ कर देता है अतः इस स्थिति से बचना अनिवार्य है। एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि ऐसा हम स्वाभाविक रूप से करें अथवा स्वाभाविक रूप से न कर पाने पर इसके लिए बाह्य प्रयास भी करें? दोनों ही स्थितियाँ उत्तम हैं। चाहे हम ऊपरी तौर पर ही क्यों न मान जाएँ लेकिन इसका जो प्रभाव होगा वो वही होगा जो स्वाभाविक रूप से मानने पर होगा। स्थितियों पर इसका सकारात्मक प्रभाव ही पड़ेगा। हमने स्वाभाविक रूप से अथवा विशेष रूप से प्रयास करके किसी भी तरह से यदि एक बार भी स्थिति को सामान्य अवस्था में ला दिया तो इससे अच्छी बात हो ही नहीं सकती।

जीवन में तरलता उत्पन्न करने का उद्देश्य तो स्थितियों को सुधारना ही है। स्थितियाँ सुधर जाएँगी तो जीवन-प्रवाह भी संतुलित हो जाएगा। इससे उपयोगी कार्यों को करना सरल हो जाएगा जो हर हाल में अनिवार्य है। किसी बात पर रूठने के बाद यदि हम मनाने पर फ़ौरन मान जाते हैं तो कई बार स्थितियाँ जीवनभर के लिए हमारे अनुकूल हो जाती हैं जबकि न मानने पर स्थितियाँ हमेशा के लिए प्रतिकूल हो सकती हैं। यदि रूठे रहना ही है तो व्यक्तियों से नहीं अपितु अपने आसपास व्याप्त नकारात्मकता से रूठ जाइए और उसे दूर करके ही मानिए। यदि कोई हमसे ये कह दे कि भई हमने तो सुना था कि आप बहुत जल्दी रूठ जाते हैं और बहुत ज़िद्दी हैं लेकिन आप तो बहुत विनम्र और सरल स्वभाव के हैं और फ़ौरन सबकी बात मान लेते हैं तो ये बात हमें सचमुच अच्छी लगेगी। यदि हमारे व्यक्तित्व अथवा स्वभाव में ये गुण नहीं हैं तो भी हम उन्हें अपनाने का प्रयास करेंगे। ये रूपांतरण जैसी स्थिति हो जाएगी लेकिन ये तभी संभव होगा जब हम दूसरों की बात मानने व अपनी ज़िद को त्यागने में अधिक देर न करें।

लेखक- सीताराम गुप्ता,
ए. डी. १०६ सी., पीतमपुरा, दिल्ली- ११००३४

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

-सम्पादक

क्या टीपू सुल्तान न्यायप्रिय शासक था?

भारत में एक विशेष वर्ग द्वारा टीपू को महान् देशभक्त से लेकर मन्दिरों को दान देने वाला न्यायप्रिय शासक बताता है। इस लेख के माध्यम से यह सिद्ध किया जायेगा कि टीपू सुल्तान मतान्ध एवं अत्याचारी शासक था। **इस लेख का मूल उद्देश्य किसी भी मुस्लिम शासक के प्रति द्वेष भावना का प्रदर्शन करना नहीं अपितु जो जैसा है उसे वैसा बताना है।** आशा है इस लेख को पढ़ कर हिन्दू युवकों को भ्रमित करने के लिए जो यह कवायद की जा रही है वह निरर्थक एवं निष्फल सिद्ध होगी।

टीपू सुल्तान के विषय में निम्नलिखित भ्रांतियाँ प्रचारित की जा रही हैं-

१. टीपू सुल्तान के राज्य में हिन्दुओं को सरकारी नौकरी में भरपूर मौका मिलता था। उदहारण के रूप में टीपू के प्रधानमंत्री का नाम पूर्णया था और वह एक ब्राह्मण था।

२. टीपू सुल्तान अनेक मन्दिरों को वार्षिक अनुदान दिया करता था।

३. टीपू सुल्तान के शृंगेरी मठ के जगद्गुरु शंकराचार्य से अति घनिष्ठ मैत्री सम्बन्ध थे। दोनों के मध्य पत्र व्यवहार मिलता है।

४. टीपू सुल्तान प्रतिदिन नाश्ता करने के पहले रंगनाथ जी के मन्दिर में जाता था जो श्रीरंगापटनम के किले में था।

५. टीपू सुल्तान ने कभी हिन्दुओं को प्रताड़ित नहीं किया। कभी हिन्दुओं पर अत्याचार नहीं किया।

६. टीपू सुल्तान देश भक्त था। उसने अपने राज्य की रक्षा के लिए अपने प्राण देकर वीरगति प्राप्त की थी(i)।

भ्रान्तियों का सप्रमाण निवारण

भ्रान्ति नं 1. टीपू सुल्तान के राज्य में हिन्दुओं को सरकारी नौकरी में भरपूर मौका मिलता था। उदहारण के रूप में टीपू के प्रधानमंत्री का नाम पूर्णया था और वह एक ब्राह्मण था।

निवारण- टीपू सुल्तान की नौकरी में मुसलमानों को प्राथमिकता दी जाती थी। **यहाँ तक कि अयोग्य होने पर भी मुसलमान होने के कारण बड़ी से बड़ी नौकरी पर एक मुसलमान को बैठाया जाता था।** इससे प्रजा की दशा और अधिक शोचनीय हो गई। टीपू सुल्तान के मंत्रियों में केवल पुर्णिया एकमात्र हिन्दू था। मुसलमानों को गृहकर, सम्पत्ति कर से छूट थी। जो हिन्दू मुसलमान बन जाता था। उसे भी यह छूट प्राप्त हो जाती थी (ii)। टीपू सुल्तान की मृत्यु के पश्चात् अंग्रेजों द्वारा नियुक्त किये गए मैसूर के भू-राजस्व विभाग के अधिकारी मक्लॉयड भी लिखते हैं कि टीपू सुल्तान के राज्य में सभी अधिकारीयों के केवल

मुस्लिम नाम हैं जैसे शेख अली, शेर खान, मुहम्मद सैय्यद, मीर हुसैन, सैयद पीर आदि (iii)।

भ्रान्ति नं 2- टीपू सुल्तान अनेक मन्दिरों को वार्षिक अनुदान दिया करता था।

निवारण- विलियम लोगन(iv) एवं लेविस राइस (v) के अनुसार टीपू सुल्तान के पूरे राज्य में उसकी मृत्यु के समय केवल दो मन्दिरों में दैनिक पूजा होती थी। उनके अनुसार टीपू सुल्तान ने दक्षिण भारत में ८०० मन्दिरों का विध्वंस किया था (vi)। अनेक लेखकों ने अपने लेखों द्वारा टीपू सुल्तान द्वारा तोड़े गए मन्दिरों पर विचार प्रकट किये हैं (vii)।

टीपू द्वारा मन्दिरों का विध्वंस

'दी मैसूर गजटियर' बताता है कि- "टीपू ने दक्षिण भारत में आठ सौ से अधिक मन्दिर नष्ट किये थे।" के.पी. पद्मनाभ मैनन (viii) और श्रीधरन मैनन (ix) द्वारा लिखित पुस्तकों में उन भग्न, नष्ट किये गये, मन्दिरों में से कुछ का वर्णन करते हैं-

"चिन्नाम महीना ६५२ मलयालम ऐरा तदुनसार अगस्त १७८६ में टीपू की फौज ने प्रसिद्ध पेरुमनम मन्दिर की मूर्तियों का ध्वंस किया और त्रिचूर और करवन्नूर नदी के मध्य के सभी मन्दिरों का ध्वंस कर दिया। इरिनेजालाकुडा और थिरुवांचीकुलम मन्दिरों को भी टीपू की सेना द्वारा खण्डित किया गया और नष्ट किया गया।" अन्य प्रसिद्ध मन्दिरों में से कुछ, जिन्हें लूटा गया, और नष्ट किया गया था, वे थे- "त्रिप्रंगोट, थ्रिचैम्बरं, थिरुमवाया, थिरवन्नूर, कालीकट थाली, हेमम्बिका मन्दिर पालघाट का जैन मन्दिर, माम्मियूर, परम्बाताली, पेम्मायान्दु, थिरवनजीकुलम, त्रिचूर का बडक्खुमन्नाथन मन्दिर, बैलूर शिवा मन्दिर आदि।"

"टीपू की व्यक्तिगत डायरी के अनुसार चिराकुल राजा ने टीपू सेना द्वारा स्थानीय मन्दिरों को विनाश से बचाने के लिए, टीपू सुल्तान को चार लाख रुपये का सोना-चाँदी देने का प्रस्ताव रखा था। **किन्तु टीपू ने उत्तर दिया था, "यदि सारी दुनिया भी मुझे दे दी जाए तो भी मैं हिन्दू मन्दिरों को ध्वंस करने से नहीं रुकूँगा"।** सौ-सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली की कहावत आपने सुनी होगी। टीपू सुल्तान पर सटीक रूप से लागू होती है।

भ्रान्ति नं 3- टीपू सुल्तान के शृंगेरी मठ के जगद्गुरु शंकराचार्य से अति घनिष्ठ मैत्री सम्बन्ध थे। दोनों के मध्य पत्र व्यवहार मिलता है।

निवारण- जहाँ तक शृंगेरी मठ से सम्बन्ध की बात है डॉ ऍम गंगाधरन (xi) लिखते है कि टीपू सुल्तान भूत प्रेत आदि में विश्वास रखता था। उसने शृंगेरी मठ के आचार्यों को धार्मिक अनुष्ठान करने के लिए दान भेजा जिससे उसकी सेना पर भूत-प्रेत आदि का कुप्रभाव न पड़े।

भ्रान्ति नं 4- टीपू सुल्तान प्रतिदिन नाश्ता करने के पहले रंगनाथ जी के मन्दिर में जाता था जो श्रीरंगापटनम के किले में था।

निवारण- पि. सी. न. राजा (xii) में लिखते हैं कि श्री रंगनाथ स्वामी मन्दिर के पुजारियों द्वारा टीपू सुल्तान के लिए एक भविष्यवाणी करी थी। जिसके अनुसार अगर टीपू सुल्तान मन्दिर में एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान करवाता था जिससे उसे दक्षिण भारत का सुल्तान बनने से कोई रोक नहीं सकता। अंग्रेजों से एक बार युद्ध में विजय प्राप्त होने का श्रेय टीपू ने ज्योतिषों की उस सलाह को दिया था। जिसके कारण उसे युद्ध में विजय प्राप्त हुई, इसी कारण से टीपू ने उन ज्योतिषियों को और मन्दिर को ईनाम रुपी सहयोग देकर सम्मानित किया था। शृंगेरी मठ और श्रीरंगनाथ स्वामी मन्दिर का नाम लेकर टीपू को उदारवादी सिद्ध करना अपने आपको धोखा देने के समान है।

भ्रान्ति नं. 5- टीपू सुल्तान ने कभी हिन्दुओं को प्रताड़ित नहीं किया। कभी हिन्दुओं पर अत्याचार नहीं किया।

निवारण- टीपू सुल्तान के पत्र और तलवार पर अंकित शब्दों को पढ़कर टीपू सुल्तान का असली

चेहरा सामने आ जाता हैं।

टीपू के पत्र

टीपू द्वारा लिखित कुछ पत्रों, संदेशों, और सूचनाओं, के कुछ अंश निम्नांकित हैं। विख्यात् इतिहासज्ञ, सरदार पाणिक्कर ने लन्दन के इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी से इन सन्देशों, सूचनाओं व पत्रों के मूलों को खोजा था।

(१) अब्दुल खादर को लिखित पत्र २२ मार्च १७८८

"बारह हजार से अधिक, हिन्दुओं को इस्लाम से सम्मानित किया गया (धर्मान्तरित किया गया)। इनमें अनेकों नम्बूदिरी थे। इस उपलब्धि का हिन्दुओं के मध्य व्यापक प्रचार किया जाए। स्थानीय हिन्दुओं को आपके पास लाया जाए, और उन्हें इस्लाम में धर्मान्तरित किया जाए। किसी भी नम्बूदिरी को छोड़ा न जाए (xiii)।"

(२) कालीकट के अपने सेना नायक को लिखित पत्र दिनांक १४ दिसम्बर १७८८- "मैं तुम्हारे पास मीर हुसैन अली के साथ अपने दो अनुयायी भेज रहा हूँ। उनके साथ तुम सभी हिन्दुओं को बन्दी बना लेना और वध कर देना।" **मेरा आदेश है कि बीस वर्ष से कम उम्र वालों को कारागृह में रख लेना और शेष पाँच हजार को पेड़ पर लटकाकार वध कर देना।** (xiv)"

(३) बदरुज समाँ खान को लिखित पत्र (दिनांक १६ जनवरी १७९०)

"क्या तुम्हें ज्ञात नहीं है निकट समय में मैंने मलाबार में एक बड़ी विजय प्राप्त की है। चार लाख से अधिक हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया गया था। मेरा अब अतिशीघ्र ही उस पानी रमन नायर की ओर अग्रसर होने का निश्चय है यह विचार कर कि कालान्तर में वह और उसकी प्रजा इस्लाम में धर्मान्तरित कर लिए जाएँगे, मैंने श्री रंगापटनम वापस जाने का विचार त्याग दिया है। (xv)"

टीपू ने हिन्दुओं के प्रति यातना के लिए मलाबार के विभिन्न क्षेत्रों के अपने सेना नायकों को अनेकों पत्र लिखे थे।

"जिले के प्रत्येक हिन्दू का इस्लाम में आदर (धर्मान्तरण) किया जाना चाहिए; उन्हें उनके छिपने के स्थान में खोजा जाना चाहिए; उनके इस्लाम में सर्वव्यापी धर्मान्तरण के लिए सभी मार्ग व युक्तियाँ- सत्य और असत्य, कपट और बल-सभी का प्रयोग किया जाना चाहिए। (xvi)"

मैसूर के तृतीय युद्ध (१७९२) के पूर्व से लेकर निरन्तर १७९८ तक अफगानिस्तान के शासक अहमदशाह अब्दाली के प्रपौत्र जमनशाह के साथ टीपू ने पत्र व्यवहार स्थापित कर लिया था। कबीर कौसर द्वारा लिखित, 'हिस्ट्री ऑफ टीपू सुल्तान' (पृ. १४१-१४७) में इस पत्र व्यवहार का अनुवाद हुआ है। उस पत्र व्यवहार के कुछ अंश नीचे दिये गये हैं।

टीपू के जमन शाह के लिए पत्र

(१) "महामहिम आपको सूचित किया गया होगा कि मेरी महान् अभिलाषा का उद्देश्य जिहाद (धर्म युद्ध) है। इस युक्ति का इस भूमि पर परिणाम यह है कि अल्लाह, इस भूमि के मध्य, मुहम्मदीय उपनिवेश के चिह्न की रक्षा करता रहता है, 'नोआ के आर्क' की भाँति रक्षा करता है और त्यागे हुए अविश्वासियों की बढ़ी हुई भुजाओं को काटता रहता है।"

(२) "टीपू से जमनशाह को, पत्र दिनांक शहबान का सातवाँ १२११ हिजरी (तदनुसार ५ फरवरी १७९६)" इन परिस्थितियों में जो, पूर्व से लेकर पश्चिम तक, सूर्य के स्वर्ग के केन्द्र में होने के कारण, सभी को ज्ञात हैं। मैं विचार करता हूँ कि अल्लाह और उसके पैगम्बर के आदेशों से एक मत हो हमें अपने धर्म के शत्रुओं के विरुद्ध धर्म युद्ध क्रियान्वित करने के लिए, संगठित हो जाना चाहिए। इस क्षेत्र के पन्थ के अनुयायी शुक्रवार के दिन एक निश्चित किये हुए स्थान पर सदैव एकत्र होकर इन शब्दों में प्रार्थना करते हैं। "हे अल्लाह! उन लोगों को, जिन्होंने पन्थ का मार्ग रोक रखा है, कत्ल कर दो। उनके पापों के लिए, उनके निश्चित दण्ड द्वारा, उनके शिरों को

दण्ड दो।"

मेरा पूरा विश्वास है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह अपने प्रियजनों के हित के लिए उनकी प्रार्थनाएँ स्वीकार कर लेगा और पवित्र उद्देश्य की गुणवत्ता के कारण हमारे सामूहिक प्रयासों को उस उद्देश्य के लिए फलीभूत कर देगा। और इन शब्दों के, "तेरी (अल्लाह की) सेनायें ही विजयी होगी", तेरे प्रभाव से हम विजयी और सफल होंगे।

टीपू द्वारा हिन्दुओं पर किया गए अत्याचार उसकी निष्पक्ष होने की भली प्रकार से पोल खोलते हैं।

१. डॉ. गंगाधरन जी ब्रिटिश कमीशन की रिपोर्ट के आधार पर लिखते हैं कि जमोरियन राजा के परिवार के सदस्यों को और अनेक नायर हिन्दुओं को टीपू द्वारा जबरदस्ती सुन्नत कर मुसलमान बना दिया गया था और गौ मांस खाने के लिए मजबूर भी किया गया था।

२. ब्रिटिश कमीशन रिपोर्ट के आधार पर टीपू सुल्तान के मालाबार हमलों १७८३-१७९१ के समय करीब ३०,००० हिन्दू नम्बूदरी मालाबार में अपनी सारी धनदौलत और घर-बार छोड़कर त्रावनकोर राज्य में आकर बस गए थे।

३. इलान्कुलम कुंजन पिल्लई लिखते हैं कि टीपू सुल्तान के मालाबार आक्रमण के समय कोझीकोड में ७००० ब्राह्मणों के घर थे जिसमें से २००० को टीपू ने नष्ट कर दिया था और टीपू के अत्याचार से लोग अपने-अपने घरों को छोड़ कर जंगलों में भाग गए थे। टीपू ने औरतों और बच्चों तक को नहीं बक्शा था। जबरन धर्म परिवर्तन के कारण मोपला मुसलमानों की संख्या में अत्यन्त वृद्धि हुई जबकि हिन्दू जनसंख्या न्यून हो गई (xvii)।

४. राजा वर्मा 'केरल में संस्कृत साहित्य का इतिहास' में मन्दिरों के टूटने का अत्यन्त वीभत्स विवरण करते हुए लिखते हैं कि हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियों को तोड़कर व पशुओं के सर काटकर मन्दिरों को अपवित्र किया जाता था (xviii)।

५. बिदुर, उत्तर कर्नाटक का शासक अयाज़ खान था जो पूर्व में कामरान नाम्बियार था, उसे हैदर अली ने इस्लाम में दीक्षित कर मुसलमान बनाया था। टीपू सुल्तान अयाज़ खान को शुरू से पसन्द नहीं करता था इसलिए उसने अयाज़ पर हमला करने का मन बना लिया। जब अयाज़ खान को इसका पता चला तो वह बम्बई भाग गया। टीपू बिद्नुर आया और वहाँ की सारी जनता को इस्लाम कबूल करने पर मजबूर कर दिया था। जो न बदले उन पर भयानक अत्याचार किये गए थे। कुर्ग पर टीपू साक्षात् राक्षस बन कर टूटा था। वह करीब १०,००० हिन्दुओं को इस्लाम में जबरदस्ती परिवर्तित किया गया। कुर्ग के करीब १००० हिन्दुओं को पकड़ कर श्री रंगपटनम के किले में बन्द कर दिया गया जिन पर इस्लाम कबूल करने के लिए अत्याचार किया गया बाद में अंग्रेजों ने जब टीपू को मार डाला तब जाकर वे जेल से छूटे और फिर से हिन्दू बन गए। कुर्ग राज परिवार की एक कन्या को टीपू ने जबरन मुसलमान बना कर निकाह तक कर लिया था (xix)।

६. मुस्लिम इतिहासकार पि. स. सैयद मुहम्मद 'केरला मुस्लिम चरित्रम्' में लिखते हैं कि टीपू का केरल पर आक्रमण हमें भारत पर आक्रमण करने वाले चंगेज़ खान और तिमूर लंग की याद दिलाता है। इस लेख में टीपू के अत्याचारों का अत्यन्त संक्षेप में विवरण दिया गया है।

भ्रान्ति 6- टीपू सुल्तान देश भक्त था। उसने अपने राज्य की रक्षा के लिए अपने प्राण देकर वीरगति प्राप्त की थी।

निवारण- सर्वप्रथम तो टीपू सुल्तान के पिता हैदर अली ने सर्वप्रथम तो मैसूर के वाडियार राजा को हटाकर अपनी सत्ता ग्रहण करी थी। इसलिए मैसूर को टीपू सुल्तान का राज्य कहना गलत है। दूसरे टीपू का सपना दक्षिण का औरंगज़ेब बनने का था। टीपू पादशाह बनना चाहता था। उसका स्वप्न देशवासियों के लिए एक उन्नत देश का निर्माण करने नहीं अपितु

दक्षिण भारत को दारुल इस्लाम में बदलना था। मालाबार जैसे सुन्दर प्रदेश का टीपू ने जिस प्रकार विनाश किया। उसे पढ़ कर कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति कह सकता है वह एक देशभक्त नहीं अपितु एक दुर्दांत, मतान्ध, कट्टर अत्याचारी था।

-डॉ. विवेक आर्य
शिशु रोग विशेषज्ञ, दिल्ली

सन्दर्भ सूची

(i) इतिहास के साथ यह अन्यायः प्रो. बी. एन. पाण्डेय
(ii) MH Gopal in Tipu Sultan's Mysore: An Economic History
(iii) Tipu Sultan X-Rayed Dr. I. M. Muthanna
(iv) William Logan Malabar Manual
(v) Lewis Rice Mysore Gazetteer
(vi) Colonel RD Palsokar confirms it in his writings.
(vii) Hindu Temples: What happened to them (Volumes 1 and 2)[Sitaram Goel
·Indian Muslims: Who are they, K. S. Lal·
Nationalism and Distortions of Indian history, Dr. N. S. Rajaram
·Negationism in India & Concealing the Record of Islam, Dr. Koenraad Elst
·Perversion of India's Political Parlance, Sitaram Goel
(viii) हिस्ट्री ऑफ कोचीन
(ix) हिस्ट्री ऑफ केरल
फ्रीडम स्ट्रगिल इन केरलः सरदार के.एम. पाणिक्कर
(x) डॉ. एम. गंगाधरन मातृभूमि साप्ताहिक जनवरी १४-२०,१९९०
(xi) केसरी वार्षिक १९६४
(xii) भाषा पोशनी-मलयालम जर्नल, अगस्त १९२३
(xiii) उसी पुस्तक में
(xiv) उसी पुस्तक में
(xv) हिस्टौरीकल स्कैचैज ऑफ दी साउथ ऑफ इण्डिया इन एन अटेम्पट टू ट्रेस दी हिस्ट्री ऑफ मैसूर- मार्क विल्क्स, खण्ड २ पृष्ठ १२०
(xvi) Elamkulam Kunjan Pillai wrote in the Mathrubhoomi Weekly of December २५, १९५५
(xvii) Vatakkankoor Raja Raja Varma in his famous literary work, History of Sanskrit Literature in Kerala.
(xviii) पि.सी.न राजा केसरी वार्षिक १९६४

Tipu-Sultan-A-Tyrant

❑❑❑

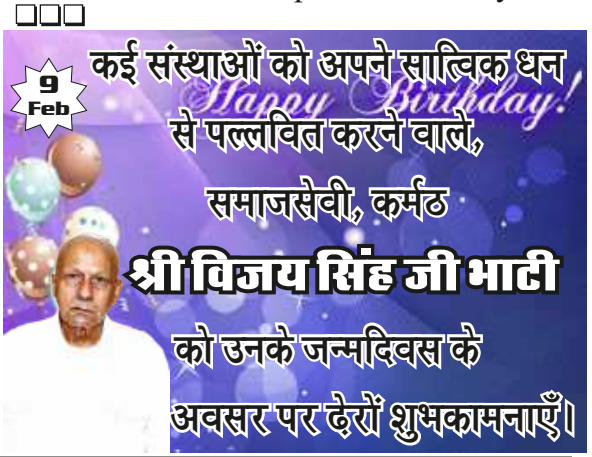

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | **भवानीदास आर्य**, मंत्री-न्यास | **डॉ. अमृत लाल तापड़िया**, संयुक्तमंत्री-न्यास

स्वास्थ्य

स्मृतिदौर्बल्य

आयुर्वेद में चिकित्स्य पुरुष को दो भागों में विभक्त किया गया है। दोष, धातु, मल स्थूल घटक हैं तथा आत्मा, इन्द्रिय और मन सूक्ष्म घटक हैं। व्यवहार में देखा जाता है कि शारीरिक व्याधियों का प्रभाव मन पर भी होता है और मानसिक व्याधियों का असर शरीर पर भी होता है अतः चिकित्सा करते समय स्थूल एवं सूक्ष्म घटकों युक्त सम्पूर्ण चिकित्स्य पुरुष को ध्यान में रखना होता है।

स्मृति दौर्बल्य एक मानसिक विकार है। आजकल के यान्त्रिक युग में स्वस्थवृत्त व सद्वृत्त का पालन न करने से, मोबाइल, टी.वी, सिनेमा आदि पर अश्लील व हिंसा के दृश्य देखने से, दिनचर्या व ऋतुचर्या का पालन न करने से, रात्रि में देर तक जागने व प्रातः देर तक सोने से, व्यवसाय की अनिश्चितता से, भागदौड़ व आपाधापी के वातावरण में ईश्वरोपासना व ध्यान, योग का अभाव आदि अनेक कारणों से मानसिक विकारों में वृद्धि होती जा रही है।

महर्षि चरक के अनुसार- **'लक्षणं मनसो ज्ञानस्याभावो भाव एव च'** अर्थात् ज्ञान का होना या न होना मन पर निर्भर करता है। मन का स्थान मस्तिष्क बताया गया है। मिथ्या आहार-विहार और बढ़ती आयु के कारण शरीर के अन्य अंगों के समान मस्तिष्क का भी धीरे-धीरे क्षय होता जाता है। जैसे-जैसे मस्तिष्क का क्षय होता जाता है वैसे-वैसे मनुष्य की स्मृति का ह्रास होता जाता है।

मन के स्वरूप का वर्णन करते हुए महर्षि चरक लिखते हैं- **'अणुत्वं चैकत्वं दौ गुणौ मनसः स्मृतौ'** अर्थात् मन अणु प्रमाण तथा एक है। मन एक समय में एक ही वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। यदि मन विभु होता तो सभी इन्द्रियों से एक साथ ज्ञान प्राप्त करता। जब हम भोजन करते हैं तो भ्रम होता है कि हम उसे देख भी रहे है, गंध भी ग्रहण कर रहे हैं और रसना द्वारा स्वाद का भी ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि ये सारे ज्ञान एक साथ हो रहे हैं, लेकिन यह भ्रम है। वस्तुतः मन तीव्र गति से इन्द्रियों से सम्पर्क करता है अतः यह भ्रम उत्पन्न होता है।

मन शब्द **"मन ज्ञाने"** धातु से बना है। **"मन्यते ज्ञायते अनेन इति मनः।"** आत्मा को जो भी ज्ञान होता है व मन के द्वारा ही होता है। जब इन्द्रियाँ विषय के साथ संयुक्त होती हैं तब मन इन्द्रियों से संयुक्त होकर आत्मा तक संवेदनों को पहुँचाता है तब ही आत्मा को किसी वस्तु का ज्ञान होता है। ज्ञान होने का क्रम है-

इन्द्रियार्थ→इन्द्रियाँ→मन→आत्मा। यदि मन कहीं

और हो और इन्द्रियार्थ इन्द्रियों से मिल भी जायें तब भी ज्ञान नहीं होता। कई बार देखा जाता है कि मन एकाग्रचित होकर किसी चिन्तन में लगा हो तब आँखे खुली होने पर भी सामने से कोई निकल जाय या तेज आवाज आती हो तो उनका ज्ञान नहीं होता। वैशेषिक दर्शन में मन के लक्षण का वर्णन करते हुए लिखा है- **'आत्येन्द्रियार्थ सन्निकर्षे ज्ञानस्य भावोऽभावश्च मनसो लिंगम।'** अर्थात् आत्मा, इन्द्रिय और इन्द्रियार्थ के सम्पर्क होने पर ज्ञान का होना या न होना, यह मन का लक्षण है।

मन चार उपादानों से मिलकर बना है- मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार। अहंकार एक कोरे कागज की तरह है। इस पर विचारों की जो पहली लकीर खींची वह चित्त है। योग दर्शन में बताया है-

'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः' चित्त की वृत्तियों को रोकना योग है। योगी जन अहंकार रूपी कोरे कागज पर वृत्तियों की लकीर को पड़ने ही नहीं देते या मिटा देते हैं तो उनका योग सिद्ध हो जाता है। यदि चित्त पर पड़ी लकीरों को नहीं मिटाया गया तो जो भाव उत्पन्न होता है व बुद्धि है। बुद्धि के विषय में बताया गया है- **'सदसद विवेकिनी बुद्धि'** अर्थात् क्या सत्य है और क्या असत्य इसका विचार बुद्धि करती है। इसके बाद मन का कार्य आरम्भ हो जाता है। मन! अपने सात्विक, राजसिक और तामसिक गुणों के रंग इस पर फेंकता है, इसके बाद ज्ञानेन्द्रियाँ कर्मेन्द्रियों को प्रेरित करती है और कर्मेन्द्रियाँ सक्रिय हो जाती हैं। इस प्रकार सात्विक, राजसिक और तामसिक गुणों के अनुरूप संसार का व्यवहार आरम्भ हो जाता है।

त्रिगुणात्मक कर्मों में लगे रहने और विषयों का ध्यान करते रहने पर बुद्धि किस प्रकार नष्ट हो जाती है। गीता में इसके विषय में सुन्दर वर्णन किया गया है।

ध्यायते विषयां पुरुषः संगस्तेषू पूजायते।
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोभिजायते।
क्रोधात् भवति सम्मोह संम्भो हात् स्मृति विभ्रमः।
स्मृति विभ्रमात् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् विनश्यति।।

(भगवद्गीता)

जब पुरुष विषयों का ध्यान करता रहता है तो उनमें संग (लगाव) हो जाता है। संग से कामनायें जन्म लेती हैं। जब कामनाएँ पूरी नहीं होती, कोई व्यवधान आता है तो क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से सम्मोह होता है, सम्मोह से स्मृति विभ्रंश, स्मृति विभ्रम से बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि के विनष्ट होने से मनुष्य का नाश हो जाता है।

बुद्धि के तीन भेद होते हैं। १. धी- सत्य-असत्य, अच्छे-बुरे का ज्ञान कराने वाली धी नामक बुद्धि होती है। २. धृति- धी द्वारा जो ज्ञान प्राप्त किया गया है उसको धारण करने की क्षमता को धृति कहते हैं। ३. स्मृति- सदसद् का विवेक कर जो मन में धारण किया गया है उसको स्मरण रखने की क्षमता को स्मृति कहते हैं। जब मन रजोगुण व तमोगुण से आवृत्त हो जाता है तब स्मृति का नाश हो जाता है। इसके अतिरिक्त मन के अधिष्ठान मस्तिष्क का बढ़ती उम्र एवं अपथ्य सेवन से क्षय होने लगता है तो भी स्मृति दौर्बल्य होने लगता है।

- ब्राह्मी, शंखपुष्पी १०-१० ग्राम, जटामांसी २० ग्राम, वच ५ ग्राम, कूठ, लौंग, छोटी इलायची के बीज ५-५ ग्राम, लाल चन्दन १० ग्राम। इन सभी का चूर्ण बनाकर रख लें। इस चूर्ण का आधा चम्मच पानी मे डालकर दिन में दो बार चाय बनाकर पीवें। साथ में भोजनोपरान्त सारस्वतारिष्ट २० मि.ली. बराबर पानी मिलाकर पीवें।

बाजार में उपलब्ध औषधियों में ब्राह्म रसायन, ब्राह्मी वटी, स्मृति सागर रस, अगस्त्य हरीतकी, ज्योतिष्मती रसायन आदि का प्रयोग अपने चिकित्सक के परामर्श से कर सकते हैं।

वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्साधिकारी
१३- श्रीराम नगर, हिरणमगरी सेक्टर- ६
उदयपुर (राज.)

❑❑❑

समाचार

महामंत्री श्री दीपक ठक्कर जी का गाँधीधाम आगमन

आज आर्य समाज गाँधीधाम के लिए एक गौरवपूर्ण और प्रेरणादायक क्षण रहा। हाल ही में गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री के रूप में निर्वाचित होने के पश्चात्, श्री दीपक ठक्कर जी का गाँधीधाम में प्रथम आगमन हुआ।

इस अवसर पर उन्होंने आर्य समाज गांधीधाम द्वारा संचालित DAV Public School, Adipur and O.M. DAV Public School, Anjar का सौजन्यपूर्ण भ्रमण किया। विद्यालय परिसर का गहन अवलोकन करते हुए श्री ठक्कर जी ने विद्यालय की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की और कहा कि यहाँ का अनुशासित वातावरण तथा विद्यार्थियों की सकारात्मक ऊर्जा मन को अत्यन्त प्रसन्न करती है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि इस संस्थान में शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों पर बल दिया जा रहा है, यह वास्तव में प्रेरणा दायक है तथा आर्य समाज गाँधीधाम द्वारा की गई यह शैक्षणिक पहल न केवल विद्यालय के लिए, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए गर्व का विषय है।

इस अवसर पर विद्यालय के चेयरमैन एवं आर्य समाज गाँधीधाम के महामंत्री श्री गुरुदत्त शर्मा जी तथा विद्यालय के मैनेजिंग डायरेक्टर एवं आर्य समाज गाँधीधाम एवं गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वाचोनिधि आचार्य जी द्वारा श्री दीपक ठक्कर जी का कच्छी पगड़ी एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया।

आचार्य प्रियव्रत अब नहीं रहे

आचार्य प्रियव्रत जी का चले जाना आर्य समाज की महती क्षति है। अनेक पुस्तकों के लेखक और मनमोहक वक्ता आचार्य प्रियव्रत जी न्यास से और हमसे बहुत स्नेह रखते थे। न्यास के अनेकानेक कार्यक्रमों में आपका पधारना होता था। अब आगे यह ना हो सकेगा इसकी पीड़ा रहेगी। न्यास की ओर से और हमारी ओर से दिवंगत आत्मा को नमन और विनम्र श्रद्धांजलि।

आर्य समाज के लिए ऐतिहासिक क्षण: श्री वाचोनिधि आचार्य जी गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज के संगठनात्मक इतिहास में एक 'गौरवपूर्ण और प्रेरणादायी क्षण' जुड़ गया है। 'आर्य समाज जामनगर' में आज सम्पन्न हुए चुनाव में, वर्ष २०१४ से आर्य समाज गाँधीधाम के प्रधान पद पर

सतत् सेवाभाव से कार्यरत श्री वाचोनिधि आचार्य जी को 'गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा' के 'प्रधान पद' पर सर्वसम्मति से निर्वाचित' किया गया। यह सर्वसम्मत निर्णय उनके प्रति सम्पूर्ण आर्य समाज परिवार के गहन विश्वास, सम्मान और उनके नेतृत्व पर अटूट भरोसे का सशक्त प्रमाण है।

श्री वाचोनिधि आचार्य जी अपने 'दूरदर्शी चिन्तन, सुदृढ़ संगठन क्षमता, निःस्वार्थ सेवाभाव और मूल्यनिष्ठ नेतृत्व' के लिए व्यापक रूप से जाने जाते हैं। उन्होंने स्वयं को 'पूर्णकालिक रूप से आर्य समाज के कार्यों के लिए समर्पित' कर दिया है और निरन्तर सेवा, संगठन एवं संस्कार के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में 'आर्य समाज गाँधीधाम' ने शिक्षा, सेवा, संस्कार, सामाजिक उत्थान और संगठनात्मक सशक्तिकरण के क्षेत्रों में एक नए आयाम को प्रदर्शित किया है।

फ्रॉड...'मिडब्रेन एक्टिवेशन' का दावा झूठा

कर्नाटक के बेल्लारी जिले के एक स्कूल की छात्रा द्वारा आँखों पर पट्टी बाँधकर परीक्षा देने की खबर ने एक बार फिर 'विशेष आंतरिक शक्ति' के दावों को चर्चा में ला दिया है। परिवार का कहना है कि बच्ची ने यह क्षमता ऑनलाइन गुरु से सीखी है। इसी दावे के खिलाफ ७५ वर्षीय तर्कशास्त्री और फेडरेशन ऑफ इण्डियन रेशनलिस्ट एसोसिएशन (FIRA) के अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र नायक १० साल से देशभर में अभियान चला रहे हैं। डॉ. नरेन्द्र नायक का कहना है कि आँखों पर पट्टी बाँधकर पढ़ने या देखने की कोई अलौकिक शक्ति नहीं होती, बल्कि यह महज ट्रिक है, जिसका इस्तेमाल जादूगर लम्बे समय से करते आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि वे और उनके साथी इस दावे की पोल खोलने के लिए पाँच लाख रुपये तक का खुला चैलेंज रखते हैं, लेकिन आज तक कोई इसे साबित नहीं कर सका। २०१७ में कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिले में प्रशासन ने 'मिडब्रेन एक्टिवेशन' और 'ब्लाइंड फोल्ड विजन' जैसी एक्टिवेशन गतिविधियों पर रोक लगाई थी।

मिडब्रेन एक्टिवेशन, होल ब्रेन डेवलपमेंट और थर्ड आई जैसे नामों से चलने वाले कोर्स दावा करते हैं कि ३ से १६ साल के बच्चे आँख बन्द कर पढ़ सकते हैं। दूर की चीजें देख सकते हैं और मिनटों में सैकड़ों पन्ने पढ़ सकते हैं। जाँच में ये सभी दावे निराधार पाए गए हैं।

साभार : दैनिक भास्कर

{ध्यातव्य है कि सन् २०१७ में रेशनलिस्ट नरेन्द्र नायक ने 'स्मार्ट ब्रेन' नामक संस्था पर पुत्तूर, सुलिया, उडुपी आदि स्थानों पर बच्चों को धोखा देने का आरोप लगाया। यह संस्था 'होल ब्रेन डेवलपमेंट प्रोग्राम' (WBDP) चला रही थी, जिसमें दावा किया जाता था कि बच्चे अन्धे कपड़े से पढ़ सकते हैं और एकाग्रता बढ़ेगी। उपायुक्त को शिकायत मिलने पर डिप्टी डायरेक्टर ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शंस (DDPI) ने टीम भेजी, जिसमें शिक्षा अधिकारी, मनोचिकित्सक डॉ. गणेश प्रसाद, विज्ञान परिषद् सदस्य और जादूगर शामिल थे। टीम ने पाया कि बच्चे कपड़े के नीचे से झाँककर देखते हैं, कोई विशेष शक्ति नहीं है। **रिपोर्ट के आधार पर २४ मार्च २०१७ को आदेश A5/EB/2017-18 जारी कर ट्रेनिंग और दावों पर रोक लगाई गई।**}

मांड्या (कर्नाटक) में 'स्पर्श' कुष्ठ रोग विरोधी अभियान : एक प्रेरक लोक-सेवा पहल

कर्नाटक के मांड्या जिले में चलाया जा रहा स्पर्श कुष्ठ रोग जागरूकता अभियान सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध लोक-सेवा आधारित प्रयासों का एक उल्लेखनीय उदाहरण है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य केवल कुष्ठ रोग की पहचान और उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि उससे भी अधिक महत्वपूर्ण लक्ष्य है- कुष्ठ रोग से जुड़े सामाजिक कलंक, भय और बहिष्कार की मानसिकता को समाप्त करना।

मांड्या जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग के नेतृत्व में यह अभियान जिला कलेक्टर, चिकित्सा अधिकारियों, आशा कार्यकर्ताओं, आंगनवाड़ी कर्मियों और स्वयंसेवी संगठनों के सहयोग से व्यापक स्तर पर संचालित किया जा रहा है। इसके अंतर्गत गाँव-गाँव और शहरी बस्तियों में घर-घर सर्वेक्षण, जन-संवाद, जागरूकता रैलियाँ और सामुदायिक बैठकों का आयोजन किया गया। लोगों को सरल भाषा में यह बताया गया कि कुष्ठ रोग छूने से नहीं फैलता, यह पूरी तरह उपचार-योग्य है और समय पर दवा लेने से रोगी सामान्य जीवन जी सकता है।

इस अभियान की विशेषता यह रही कि इसमें केवल चिकित्सा पक्ष नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना और सामाजिक समावेशन पर विशेष बल दिया गया। जिला प्रशासन ने स्पष्ट संदेश दिया कि कुष्ठ रोगियों के साथ भेदभाव करना न केवल अवैज्ञानिक है, बल्कि यह एक गंभीर सामाजिक अन्याय भी है। सार्वजनिक मंचों से यह अपील की गई कि समाज रोग से लड़े, रोगी को स्वीकार करे और उसका सम्मान बनाए रखे।

मांड्या में स्पर्श अभियान के माध्यम से विद्यालयों, स्वयं सहायता समूहों और स्थानीय समुदायों को भी जोड़ा गया, जिससे नई पीढ़ी में वैज्ञानिक सोच और करुणा का विकास हो। इस पहल ने यह सिद्ध किया कि जब प्रशासन, स्वास्थ्य तंत्र और समाज एक साथ आगे आते हैं, तब सामाजिक कुरीतियों को जड़ से समाप्त किया जा सकता है।

मांड्या का यह प्रयास केवल एक स्वास्थ्य अभियान नहीं, बल्कि मानव गरिमा, समानता और सामाजिक चेतना का आंदोलन बनकर उभरा है, जो अन्य जिलों और राज्यों के लिए भी प्रेरणास्रोत है।

गणतंत्रता दिवस को भव्य रूप से मनाया गया

दयानन्द कन्या विद्यालय सेक्टर-४ हिरण मगरी में गणतंत्र दिवस भव्य रूप से मनाया गया। ध्वजारोहण के पश्चात् मुख्य अतिथि श्रीमती डॉ. गायत्री पंवार ने बालिकाओं को सम्बोधित काते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि आज के इस राष्ट्रीय पर्व से प्रेरणा ग्रहण करते हुए आप शिक्षा

प्राप्त कर भारतवर्ष का नाम सर्वत्र प्रसिद्धि के उच्च आयाम को स्पर्श करे ऐसा कार्य करें। इस अवसर पर स्मृतिशेष पाल साहब की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री भूपेन्द्र जी शर्मा के सौजन्य से खेल-कूद प्रतियोगिता में विजयी बालिकाओं को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज के संरक्षक डॉ. अमृतलाल जी तापड़िया, श्रीमती शारदा जी गुप्ता तथा दयानन्द कन्या विद्यालय के मंत्री श्री कृष्ण कुमार सोनी, विद्यालय की निदेशक श्रीमती पुष्पा सिंधी, विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रेमलता मेनारिया आदि उपस्थित थें।

Fit Hai Boss
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 February-2026 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

सादर निमंत्रण

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

राष्ट्र मन्दिर का भव्य लोकर्पण

धन्य हैं वे श्रेष्ठि जन जिनके सहयोग से ऐसे दीप
का प्रज्ज्वलन हो जो सदियों तक अन्धकार का निवारण करता रहे।

वीरात्मभयः कृतज्ञतायै, राष्ट्रभावाय समर्पितम्।
एतद् दानं सन्तीतीनां चेतनां जागरयेत्।।

महाशय राजीव जी गुलाटी

की प्रस्तुति

अद्भुत, अतुल्य भारत का गौरव

राष्ट्र मन्दिर

SILICON MUSEUM

A TRIBUTE TO INDIAN FREEDOM FIGHTERS

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर